सं. 144 जनवरी - मार्च 2015 ISSN 0972-2386

कडलमीन

सी एम एफ आर आइ समाचार

http://www.cmfri.org.in

चित्रः डॉ.मदन मोहन, सहायक महानिदेशक (समुद्री मात्स्यिकी), भा कृ अनु प उप्पुन्डा में समुद्रीबास मछली संग्रहण कार्यक्रम का उद्घाटन करने का दृश्य

कृपया पृष्ठ 4 देखें

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद
केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान
पी.बी.सं. 1603, एरणाकुलम नोर्त पी.ओ., कोचीन - 682 018, केरल, भारत

हर कदम, हर डगर
किसानों का हमसफर
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद
Agrisearch with a human touch

विषय सूची

हरित शंबु के बडे पैमाने में संतति उत्पादन में महत्वपूर्ण सफलता	3
कर्नाटक के उप्पुन्डा में मछली संग्रहण मेला	4
खारा पानी के पिंजरों में एशियन समुद्री बास और पेर्लस्पोट मछलियों के पालन में सफलता	5
अनुसंधान मुख्य अंश	8
घटनाएं	14
प्रदर्शनि/प्रदर्शलियाँ	15
राजभाषा कार्यान्वयन	17
प्रमुख व्यक्तियों का मुआइना	18
कार्यशाला / प्रशिक्षण	19
प्रकाशन	22
कृ वि कें (एरणाकुलम) समाचार	23
कार्यक्रम में सहभागिता	24
कार्मिक समाचार	27

प्रकाशक

डॉ. ए. गोपालकृष्णन
निदेशक
केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान
पोस्ट बोक्स सं.1603, एरणाकुलम नोर्त पी.ओ
कोचीन - 682 018, केरल, भारत
दूरभाष : 0484-2394867
फैक्स: 91-484-2394909
ई-मैल: director@cmfri.org.in
वेबसाइट: www.cmfri.org.in

संपादक
डॉ.यु. गंगा

संपादकीय मंडल
डॉ. रेखा जे नायर
डॉ. आर. जयभास्करन
डॉ. काजल चक्रबर्ती
श्री डी. लिंग प्रभु
श्रीमती. पी. गीता
श्री अरुण सुरेन्द्रन
श्री पी. आर. अभिलाष

हिन्दी अनुवाद
श्रीमती ई. के. उमा

निदेशक कहते हैं

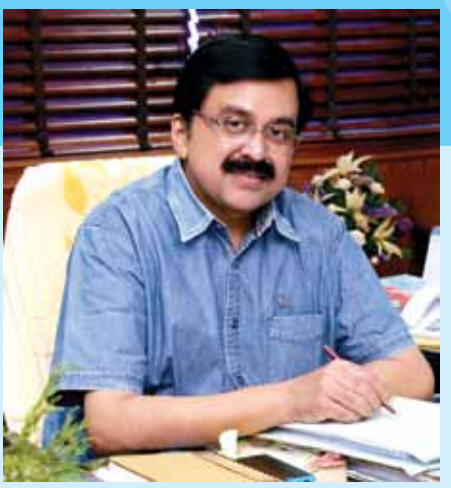

सबको हार्दिक नमस्कार

सी एम एफ आर आइ के अनुसंधान कार्यक्रमों और गतिविधियों को शानदार बनाने का प्रयास किया गया जिसकी वजह से समुद्र से टिकाऊ मात्स्यिकी और वर्धित मछली उत्पादन का लक्ष्य प्राप्त किया जा सका। यह स्पष्ट है कि समुद्री मछली पालन से तटीय मछुआरा समुदायों का आय बढ़ाया जा सकता है। खुला समुद्र, पश्चजलों एवं नदीमुखों में पिंजरों में मछली पालन करने के लिए संस्थान द्वारा प्रौद्योगिकी का हस्तांतरण किया जाता है और इसके लिए निदर्शन और टी एस पी कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। मछुआरों द्वारा इस उद्यम की ओर दिखायी जाने वाली अभिरुचि से बडे पैमाने में परियोजनाएं आयोजित करने और सफल बनाने में वैज्ञानिक गण प्रेरित हो गए। हरित शंबु के बडे पैमाने में संतति उत्पादन में हुई सफलता इस दिशा में प्राप्त महत्वपूर्ण उपलब्धि का अच्छा उदाहरण है। हरित शंबु बडी मांग होने वाली जाति है लेकिन पालन के लिए पर्याप्त मात्रा में संततियों को मिलना सबसे बडी बाधा है। प्राकृतिक स्थानों से संततियों का संग्रहण करने पर शंबु संतति संग्राहकों एवं पालनकारों के बीच में स्पर्धा होने की संभावना है। बडे पैमाने में संततियों का उत्पादन करने पर मछुआरों को पालन का समय होने पर ही सुलभता से संतति मिल सकते हैं। हाल ही में प्राप्त एक और उपलब्धि गैर मौसम में सिल्वर पोम्पानो मछली का प्रजनन है। फोटो-थेर्मल नियमन उपयुक्त करके इस मछली का प्रजनन करने की वजह से मछुआरों को पूरे वर्ष में इस मछली के संतति मिलेंगे ताकि वे इस वाणिज्यिक प्रमुख मछली का पालन बेहत्तर ढंग से कर सके। प्राकृतिक स्थानों से पकड़ी गयी मछली देश की मछली खाद्य पूर्ति का मुख्य सहारा है। यह सर्वविदित है कि विश्वव्यापक रूप से कई मछली स्टॉक का अतिविदोहन किया जा चुका है जिसकी वजह से ग्राहकों की मछली खाद्य पूर्ति एवं मछुआरों की आजीविका के लिए खतरा होने की संभावना है। फिर भी मछली ग्राहकों को इस खतरे पर अवगाह है। टिकाऊ मत्स्यन की ओर ध्यान आकर्षित करने के लिए सी एम एफ आर आइ और डब्लियु डब्लियु एफ इंडिया ने संयुक्त रूप से समझौता किया है। टिकाऊ तौर पर पकड़ी गयी मछली के खपत को प्रोत्साहित करने और टिकाऊ मापदंड के लायक नहीं होने वाली मछलियों को निरुत्साहित करने के लिए वैज्ञानिक तरीके उपयुक्त किए गए है। केरल के *पोक्काली* चावल खेतों से उत्पादित चावल और मछली को ब्रांडिंग करने में कृषि विज्ञान केन्द्र, एरणाकुलम की सक्रिय सहभागिता एक और महत्वपूर्ण पहल है। परंपरागत तौर पर चावल और मछली फसल का एकांतर रूप से पालन किया जाता है और इन उत्पादों का ब्रांडिंग करने से पालनकारों को अच्छा मूल्य प्राप्त होने के साथ साथ ग्राहकों को सुरक्षित एवं पौष्टिक समृद्ध आहार भी मिल जा सकेगा। आशा है कि इन पहलों के द्वारा मात्स्यिकी सेक्टर सशक्त हो जाएगा और इसका लाभ समाज को मिलेगा।

अ. गोपाल

डॉ. ए. गोपालकृष्णन
निदेशक

सी एम एफ आर आइ के बारे में

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के अधीन स्थापित केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, कोचीन समुद्री मात्स्यिकी और समुद्र कृषि में अनुसंधान और प्रशिक्षण के लिए समर्पित सर्वप्रमुख अनुसंधान संस्थान है।

सी एम एफ आर आइ के तीन क्षेत्रीय केंद्र याने कि मंडपम कैंप, विशाखपट्टणम और वेरावल तथा सात अनुसंधान केंद्र भारत की तट रेखा में कार्यरत हैं जो देश के समुद्रवर्ती राज्यों को समुद्री मात्स्यिकी नीति का अनुपालन करने में सहायता प्रदान करते हैं।

हरित शंबु के बडे पैमाने में संतति उत्पादन में महत्वपूर्ण सफलता

हरित शंबु (*पेर्ना विरिडिस*) के बडे पैमाने में संतति उत्पादन में सी एम एफ आर आइ ने महत्वपूर्ण सफलता हासिल की है जिसकी वजह से देश में शंबु पालन की साध्यता खोली गयी है। उत्तर केरल और गोवा में हाल ही में शंबुओं की बढ़ती हुई मांग के कारण केरल में प्रति हरित शंबु के मूल्य में 5-10 रुपए और गोवा में 15 रुपए की वृद्धि हुई है। वर्ष 2009 में शंबुओं के 18400 टन के श्रृंग उत्पादन के बाद पालन किए गए शंबुओं के उत्पादन में प्रति वर्ष 10000 टन की स्थिरता देखी गयी। भारत में, पालन किए गए शंबु उत्पादन में बाधा होने का एक प्रमुख कारण गुणता युक्त संततियों की पर्याप्त मात्रा में उपलब्धता की कमी है। उत्तर केरल में हरित शंबुओं का बडे पैमाने में पालन शुरू होने पर प्राकृतिक स्थानों से संततियों का संग्रहण करना पडा और इस कारण से शंबु संतति संग्रहण करने वालों और मछुआरों के बीच में संघर्ष होने लगा। लेकिन हाल ही में सी एम एफ आर आइ विषिंजम अनुसंधान केन्द्र की स्फुटनशाला में शंबुओं के डिंभकों और संततियों का उत्पादन करने का परीक्षण किया गया और इसकी सफलता भारत में वाणिज्यिक तौर पर शंबु संतति उत्पादन की प्रौद्योगिकी के विकास की ओर इशारा करती है। इस परीक्षण से यह व्यक्त हुआ कि 1 टन की धारिता के एफ आर पी टैंक में 30-40 दिनों में 0.1 मिलियन स्पैटों का उत्पादन किया जा सकता है। इन स्पैटों को 40-50 दिनों में छोटी जालाक्षि युक्त जालों वाले पिंजरों में 95% की अतिजीवितता दर पर 10-15 मि.मी. के आकार तक बढ़ाया जा सकता है। डिंभक पालन के दौरान यह देखा गया कि D वेलीगर स्तर के 80% डिंभक 8वां दिन में अम्बो स्तर तक बढ़ गए। इन में से अधिकांश डिंभक 15वां दिन में आइस्पोट और पेडिवेलीगर स्तर तक पहूँच गए और 24वां दिन में ये स्पैट बन गए। इसके बाद 40वां दिन में ये 3-5 मि.मी. के आकार तक बढ़ गए और वाणिज्यिक तौर पर संतति उत्पादन करने के लिए इन्हें पालन टैंकों में स्थानांतरित किया गया।

पेडिवेलीगर स्तर के रेडी टू सेटिल डिंभकों को ऑक्सिजन भरे गए पोलिथीन बैगों में दूर स्थानों में स्थानांतरित किया जा सकता है। इस तरह एक पोलिथीन बैग में 25000 डिंभकों की दर में 50,000 पेडिवेलीगर डिंभकों को कालिकट अनुसंधान केन्द्र में स्थानांतरित किया गया और जमाव के लिए उपयुक्त किया गया।

स्फुटनशाला में उत्पादित हरित शंबु संततियों का दृश्य

हरित शंबु का अंडजनन

निषेचित अंड

पेडिवेलीगर स्तर

शंबु स्पैट - 25 दिन

शंबु स्पैट - 35 दिन

टैंक से स्पैटों का संग्रहण

पालन पिंजरों में स्पैटों का संभरण

शंबु संततियों का दृश्य

कर्नाटक के उप्पुन्डा में मछली संग्रहण मेला

डॉ.मदन मोहन कर्नाटक में आयोजित समुद्रीबास मछली और हरित शंबु संग्रहण मेले का उद्घाटन करते हुए

डॉ.मदन मोहन, सहायक महानिदेशक (समुद्री मात्स्यिकी), भा कृ अनु प और डॉ.ए.गोपालकृष्णन, निदेशक ने दिनांक 28 मार्च, 2015 को कर्नाटक के उप्पुन्डा, सालिग्राम और मुल्की के नदीमुखों के समुद्री संवर्धन स्थानों का मुआइना किया। प्रौद्योगिकी निदर्शन के अंदर प्रारंभिक कदम के रूप में मांगलूर अनुसंधान केन्द्र द्वारा पहले ही पिंजरों और बेडों की स्थापना की गयी थी। इस से प्रेरित होकर उसी क्षेत्र के कई मछुआरे उचित क्षेत्रों में देशीय तौर पर अनुकूलित पिंजरों में पखमछली और बेडों में द्विकपाटियों (शंबु और शुक्ति) का पालन करने के लिए आगे आए। डॉ.मदन मोहन ने उडुप्पी जिले के उप्पुन्डा में समुद्री बास मछली की संग्रहण मेला का उद्घाटन किया। लगभग 18 महीनों की पालन अवधि के दौरान मछली 3.5 कि.ग्रा. भार तक बढ़ गयी। एक पिंजरे से भागिक रूप से 100 कि.ग्रा. मछली का संग्रहण किया गया और प्रति किलोग्राम के लिए 400/- रुपए की दर पर बेच दी गयी। उन्होंने सालिग्राम में मछुआरों द्वारा बेडों में बडे पैमाने में पालन किए जाने वाले शंबु पालन स्थान और मुल्की में मराठी नाइक समुदाय के जनजाति लोगों, जिनको हाल ही में समुद्री संवर्धन गतिविधियों में प्रशिक्षण दिया गया था, के टी एस पी कार्यक्रम क्षेत्र का भी मुआइना किया।

मुल्की में पख मछली पालन के लिए उपयुक्त देशज पिजरों का दृश्य

पिल्लैमडम लैगून में मिल्कफिश का संग्रहण

रामनाथपुरम जिले के वेदालै गाँव के पास पिल्लैमडम लैगून में भा कृ अनु प-एन आइ सी आर ए परियोजना के अंदर मई, 2014 महीने में मछुआरा ग्रुप की सहभागिता से पेन फार्मिंग द्वारा मिल्कफिश *चानोस चानोस* का परीक्षणात्मक पालन शुरू किया गया। कैशुरीना खंभों के सहारे से 120x120 मी. का कारीगरी पेन बनाया गया और इसमें 10 मई, 2014 को लैगून से संग्रहित 6.3 से.मी. की लंबाई और 4.6 ग्रा. के भार वाले 25,000 मिल्कफिश संततियों का संभरण किया गया। पालन के लिए सी एम एफ आर आइ मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र ने तकनीकी सहायता प्रदान की और मछली जाल, कैशुरीना खंभों और श्रम का खर्च मछुआरा ग्रुप ने दिया। जैवभार के 1% की दर में 24% क्रूड प्रोटीन और 4% वसा युक्त संपूरक खाद्य सी एम एफ आर आइ ने प्रदान किया और यह खाद्य चार अशन स्थानों में पी वी सी ढांचों के सहारे से दिया गया। लगभग 10 महीनों की पालन अवधि के बाद 14 मार्च, 2014 को भागिक रूप से संग्रहण किया गया और क्रमशः 33 से.मी और 300 ग्रा. के लंबाई एवं भार वाली कुल 250 कि.ग्रा. मिल्कफिश पकड़ी गयी। इन मछलियों को वेदालै मछली बाज़ार में प्रति किलो ग्राम के लिए 140/- रुपए की दर में बेच दिया गया। इसके बाद के दिनों में 500 कि.ग्रा. मिल्कफिश का संग्रहण किया गया। बाकी मछलियों को अप्रैल-मई अवधि के मत्स्यन रोध के दौरान मछली की उपलब्धता कम होने पर उच्च बाज़ार मूल्य में बेचने के लिए पिंजरे में ही रखा गया।

(ए.के.अब्दुल नासर, आर.जयकुमार, जी. तमिलमणी, पी.रमेशकुमार, बी.जोनसन, अमीर कुमार शामल और के.के.अनिकुट्टन, मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र की रिपोर्ट)

खारा पानी के पिंजरों में एशियन समुद्री बास और पेर्लस्पोट मछलियों के पालन में सफलता

संस्थान द्वारा विकसित पिंजरा मछली पालन प्रौद्योगिकी मछुआरों द्वारा अपनायी गयी है और केरल के खुले खारा पानी क्षेत्रों में सफल रूप से मछली पालन किया जा रहा है। श्री एस.शर्मा, केरल विधान सभा का माननीय सदस्य एवं भूतपूर्व मात्स्यिकी मंत्री ने एरणाकुलम जिले के पूयप्पिल्ली में दिनांक 21 मार्च, 2015 को आयोजित मछली संग्रहण मेले का उद्घाटन किया। डॉ.ए.गोपालकृष्णन, निदेशक कार्यक्रम में अध्यक्ष रहे। डॉ.इमेल्डा जोसफ, प्रधान वैज्ञानिक, समुद्री संवर्धन प्रभाग ने सभा का स्वागत किया। मुलवुकाड ग्राम पंचायत के अध्यक्ष एवं सदस्य, एम पी ई डी ए और राज्य मात्स्यिकी विभाग के प्रतिनिधि गण भी कार्यक्रम में उपस्थित थे।

मुलवुकाड पंचायत के परंपरागत चिंगट पालनकार श्री प्रमोद द्वारा परिचालित पिंजरे में दो टन एशियन समुद्रीबास *लाटस कालकारिफर* मछली, जिसे स्थानीय रूप से *कालांची* कहा जाता है, का पालन किया गया। पालन के लिए उन्होंने राजीव गांधी जलकृषि केन्द्र (आर जी सी ए) से 4-6 से.मी. आकार वाले लगभग तीन हजार मछली संतति खरीदे और 45 दिन इनका नर्सरी पालन करने के बाद अप्रैल, 2014 महीने में सी एम एफ आर आइ द्वारा विकसित और मछुआरे द्वारा सजाए गए 4 मी. x 4 मी. के आकार वाले दो गालवनाइस्ड अयेर्न (जी आइ) पिंजरे में संभरित किए गए। समुद्रीबास मछली को एक वर्ष की पालन अवधि, जब ये 850 से 1500 ग्रा. भार तक बढ़ जाएगी, तक खाने के लिए प्रति किलो ग्राम को 20 रुपए की कम मूल्य वाली मछली दी गयी। पिंजरे में समुद्रीबास मछली के साथ परंपरागत चिंगट खेतों से संग्रहित पेर्लस्पोट *एट्रोप्लस सुराटेन्सिस* मछली का भी पालन किया गया और इस से मछुआरे को 50,000 रुपए का अतिरिक्त आय प्राप्त हुआ। अब यह मछुआरा अगले पालन काल के लिए दो पिंजरे सजाने की तैयारियाँ कर रहा है। इस पालन प्रौद्योगिकी की ओर मुलवुकाड पंचायत के और अधिक मछुआरे लोग प्रेरित होकर आगे आए हैं। केरल के अब तक उपयोग नहीं किए गए जल-क्षेत्रों में इस तरह की पालन प्रौद्योगिकी अमल में लाने की साध्यता है।

एरणाकुलम जिले के पूयप्पिल्ली में समुद्रीबास मछली संग्रहण का उद्घाटन कार्यक्रम

पिंजरे में मिल्कफिश का पालन

पख मछली पालन पर कोच्ची में किए गए कई सफल निदर्शनों के प्रभाव से मछुआरों ने अब मछली जाति को चुनकर पालन करना शुरू किया है। अब तक मिल्कफिश चानोस चानोस का पालन कोच्ची के परंपरागत ज्वारीय तालाबों में किया जाता था। यह सक्रिय, कम धीरे धीरे बढ़ने वाली और अपशिष्ट खाने वाली है। हाल ही में सी एम एफ आर आइ की प्रौद्योगिकी से एक नवोन्मेषी चिंगट पालक श्री सुनिल ने पनंपुकाड के खारा पानी क्षेत्र में 4 मी.x 4 मी. के आकार वाले स्टील के पिंजरे में मिल्कफिश का सफलतापूर्वक पालन किया। उन्होंने अप्रैल, 2014 महीने में तमिल नाडु के रामेश्वरम से मिल्कफिश के 2-4 से.मी. आकार युक्त लगभग 4500 संततियों को खरीदा और पिंजरे में संभरित किया। इन मछली संततियों को फोर्मुलेटड आहार से खिलाया गया और 8 महीने की पालन अवधि के दौरान करीब 400 ग्रा. भार वाली मछली का संग्रहण किया जा सका। मछली का फार्म गेट मूल्य प्रति किलोग्राम के लिए 200/- रुपए था। पिंजरे में अचानक प्रवेश की गयी कुछ एशियन समुद्रीबास मछलियों ने मिल्कफिश को शिकार करने से पिंजरे की अतिजीविता पर नुकसान हुआ। बेहत्तर अशन और अन्य प्रबंधन कार्यों की वजह से खेत में पालन करने की अपेक्षा पिंजरे में मछली की अच्छी बढ़ती देखी गयी।

(डॉ.इमेल्डा जोसफ,
समुद्री संवर्धन प्रभाग की रिपोर्ट)

पूत्तोट्टा में पिंजरे में पालित मछली का संग्रहण

समुद्री संवर्धन प्रभाग के तकनीकी मार्गनिदेश के अंदर एरणाकुलम जिला के पूत्तोट्टा के पश्चजल में खंभों से लंगर करके 4 मी. x 4 मी. के आकार वाले स्टील का पिंजरा स्थापित किया गया। पिंजरे में अप्रैल, 2014 महीने में स्थानीय रूप से संग्रहित पेर्लस्पोट (*एट्रोप्लस सुराटेन्सिस*) मछली के संतति और मत्स्यफेड, वेलियंगोड से खरीदे गए स्फुटनशाला में उत्पादित जी आइ एफ टी तिलापिया मछली और त्रिप्रयार क्षेत्र से संग्रहित रेड स्नाप्पर *(लूटजानस अर्जेन्टिमाकुलेटस)* मछली के संततियों का संभरण किया गया। सी एम एफ आर आइ द्वारा वर्ष 2008 में यह प्रौद्योगिकी विकसित किए जाने के बाद यह पहली बार दक्षिण कोच्ची के क्षेत्र में पिंजरा मछली पालन का निदर्शन किया जाता है। डॉ.ए.गोपालकृष्णन, निदेशक ने दिनांक 23 दिसंबर, 2014 को उदयमपेरूर ग्राम पंचायत के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, वार्ड के सदस्यों तथा गाँव के लोगों की उपस्थिति में मछली संग्रहण का उद्घाटन किया। पालन के 4 से 6 महीनों की अवधि के दौरान पेर्लस्पोट मछली का भार 250 से 350 ग्राम तक पहूँच गया। जी आइ एफ टी तिलापिया मछली का भार पालन के 8 महीने के दौरान 750 से 800 ग्राम और रेड स्नाप्पर मछली का 1 से 1.4 कि.ग्रा. तक था। संग्रहित तिलापिया को प्रति किलोग्राम के लिए 200/- रुपए, पेर्लस्पोट का प्रति किलोग्राम के लिए 500/- रुपए और रेड स्नाप्पर को प्रति किलोग्राम के लिए 400/- रुपए की दर पर स्थानीय बाजार में बेच दिया गया। उसी दिन 50 स्थानीय मछुआरों के लिए पिंजरा मछली पालन पर प्रशिक्षण भी आयोजित किया गया।

(डॉ.षोजी जोसफ, समुद्री संवर्धन प्रभाग की रिपोर्ट)

पालित रेड स्नाप्पर मछली का संग्रहण

कोषिक्कोड के अत्तोली के निकट कोडश्शेरी में श्री शंकरन के मछली तालाब में पालित स्थानीय रूप से चेम्पल्ली बुलायी जाने वाली रेड स्नाप्पर (*लूटजानस अर्जेन्टिमाकुलेटस*) मछली का संग्रहण 18 मार्च, 2015 को किया गया। मछली पालन के लिए तकनीकी सहायता समुद्री संवर्धन प्रभाग द्वारा प्रदान की गयी। डॉ.पी.के.अशोकन, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी वैज्ञानिक, सी एम एफ आर आइ कालिकट अनुसंधान केन्द्र ने संग्रहण मेले में अध्यक्ष रहे। कोरापुषा नदी से अगस्त, 2014 महीने में रेड स्नाप्पर मछली के करीब 100 ग्राम भार वाले दो सौ पचास उंगलिमीनों को पकडकर निकटस्थ 5 सेन्ट क्षेत्रफल वाले तालाब में संभरित किया गया। उनको आहार के रूप में अपने शरीर भार के 3% की दर पर % कम मूल्य वाली मछली दी गयी और उच्च ज्वार के दौरान तालाब के जलद्वार से प्रवेश करने वाली छोटी मछली संपूरक खाद्य बन गयी। लगभग 7 महीनों की पालन अवधि में मछली उच्च अतिजीविता के साथ एक किलोग्राम भार तक पहूँच गयी। तालाब से कुल 245 किलोग्राम रेड स्नाप्पर मछली का संग्रहण किया गया और प्रति किलोग्राम के लिए 400/- रुपए की दर पर बेच दी गयी। पालन के लिए हुआ निवेश लागत 35,000/- रुपए थी और कुल 63,000/- रुपए का लाभ प्राप्त हुआ। इस तरह यह निदर्शन किया गया कि रेड स्नाप्पर हार्डी मछली होने पर भी यह लवणता के व्यापक परास का सहन कर सकती हैं और इसलिए मलबार क्षेत्र के कम लवणता के जलक्षेत्रों में प्रग्रहण पर आधारित जलकृषि (सी बी ए) के आधार पर इस मछली का पालन किया जा सकता है।

रेड स्नाप्पर मछली के संग्रहण का दृश्य

रेड स्नाप्पर मछली का संग्रहण

मांगलूर में ट्राइबल सब प्लान परियोजना का प्रारंभ

मांगलूर अनुसंधान केन्द्र के ट्राइबल सब प्लान कार्यक्रम (टी एस पी) के अंदर पालन योग्य मछलियों के पालन के लिए साबित कम लागत की समुद्री संवर्धन रीतियों का निदर्शन किया गया। इसके अंदर फरवरी, 2015 महीने में 4.5 लाख रुपए का रकम मंजूर किया गया और उसी महीने में टी एस पी कार्यक्रम शुरू किया गया। समुद्री संवर्धन की प्रारंभिक परियोजना के लिए मराठी नाइक जनजाति के ग्रुप को चुना गया। कुल 45 व्यक्तियों को इस कार्यक्रम के अंदर प्रशिक्षण दिया गया। इनमें से 12 सदस्यों के एक ग्रुप ने मांगलूर से 45 कि.मी. की दूरी के मुल्की नदीमुख में समुद्री संवर्धन कार्यविधियाँ शुरू की गयीं।

मुल्की नदीमुख में द्विकपाटियों (शंबु और शुक्ति) के पालन और स्पैटों के संग्रहण के लिए 3 बेडाएं स्थापित किए गए और % पालन कार्य का प्रारंभ किया गया। पख मछली पालन के लिए 50 मि.मी. नेटलोन से बनाए गए जाल, 18 मि.मी. जालाक्षि वाले एच डी पी ई का आंदरिक जाल और पिंजरे की ढांचे के रूप में जी आइ पाइप युक्त 6x2x2 मी. के आकार के साथ लघु पैमाने के चार पिंजरे सजाए गए। पालन के लिए समुद्रीबास और रेड स्नाप्पर मछलियों के अगुलिमीनों को चुना गया। मछुआरों को 95 अतिजीविता दर से नर्सरी पालन करने के नयाचार पर बताया गया। पख मछली संततियों को सीधा पालन पिंजरे में स्थानांतरित करने से पहले नर्सरी पालन करने के लिए मुल्की नदीमुख में कई हाप्पाओं की स्थापना की गयी। इन हाप्पाओं में पूर्वी तट की एक स्फुटनशाला से खरीदे गए 8 से.मी. के आकार युक्त 1800 समुद्रीबास संततियों का एक महीने तक पालन किया गया। इनको 30 % प्रोटीन युक्त खाद्य दिया गया और खाद्य दर उचित रूप से समायोजित करने के लिए नियमित रूप से मॉनीटरिंग भी किया गया। बडे आकार की मछलियों को अलग पिंजरों में पालन किए जाने के लिए नियमित अंतराल में मछलियों का ग्रेडिंग किया जाता है।

(मांगलूर अनुसंधान केन्द्र की रिपोर्ट)

सी एम एफ आर आइ का परिवर्तित नए वेबसाइट का लांचिंग

संस्थान के 68वां स्थापना दिवस समारोह के सिलसिले में 3 फरवरी, 2015 को आयोजित कार्यक्रम में प्रोफसर (डॉ.) एन.आर.मेनोन ने परिवर्तित वेबसाइट का औपचारिक उद्घाटन किया। डॉ.के.एस.मोहम्मद के नेतृत्व में गठित वेबसाइट विकास समिति ने नए वेबसाइट का रूपायन किया।

डॉ.सत्यानन्दन टी.वी.,
डॉ.जयशंकर जे.,
डॉ.मोहन वी.,
श्री मनु वी.के.,
श्री मंजीष आर.,
श्रीमती जयलक्ष्मी वी.
और श्रीमती दीपा पी.एन.
समिति के सदस्य थे।

गैर मौसम में सिल्वर पोम्पानो के अंडजनन में हुई सफलता से पूरा वर्ष संतति उत्पादन का इशारा

सी एफ एल प्रकाश में टाइमर लगाकर फोटोपिरीयड का नियमन

सीएम एफ आर आइ मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र में फोटो-थेर्मल नियमन द्वारा गैर मौसम में सिल्वर पोम्पानो मछली के अंडजनन में पहली बार सफलता प्राप्त हुई। नवंबर 2014 से फरवरी 2015 तक की अवधि के दौरान कुल तीन बार अंडजनन सफल हुआ। इस से पूरे वर्ष के दौरान सिल्वर पोम्पानो मछली का अंडजनन साध्य कराने में संस्थान ने महत्वपूर्ण सफलता हासिल की है।

नवंबर महीने की शुरुआत से समुद्र के पानी का तापमान इष्टतम स्तर से क्रमिक रूप से घट जाता है और यह सिल्वर पोम्पानो मछली के लगातार प्रजनन और संतति उत्पादन के मार्ग की प्रमुख बाधा थी। प्रजनन ट ँकों में थेर्मोस्टाट युक्त टाइटानियम वाटर हीटर द्वारा तापीय विनियम करके स्रोत समुद्र जल का तापमान 25 - 260क से 29.7 - 30.30क तक बढ़ाया जा सका।

थेर्मोस्टाट लगाए गए टाइटानियम हीटरों द्वारा तापीय नियमन

स्फुटनशाला में मुक्ता शुक्ति स्पैटों का परीक्षणात्मक पालन

सीएम एफ आर आइ विषिंजम अनुसंधान केन्द्र में उत्पादित मुक्ता शुक्ति *पिंक्टाडा फ्यूकेटा* के 47,000 स्पैटों का टोकरी पिंजरों (26 से.मी. का व्यास और 16 से.मी. की लंबाई) में प्रति टोकरी में 200 से 1000 तक के परास की विभिन्न संभरण सघनता में पालन किया गया। पालन के प्रथम दो महीनों में छोट ` आकार के स्पैट बच जाने से रोकने के लिए पिंजरे वेलोन स्क्रीन से आवृत किए गए और बाद में पानी का बेहत्तर बहाव, अच्छी खाद्य पूर्ति, ओक्सिजन की उपलब्धता और अपशिष्ट निकाल आदि के उद्देश्य से स्क्रीन निकाला गया। प्रति टोकरी में 1000 स्पैटों की सघनता तक बढ़ती दर में कमी नहीं होती है। इसी तरह 4 महीनों के अंदर नर्सरी पिंजरों में 35 से 40 मि.मी. के औसत आकार वाले लगभग 35000 संततियों का उत्पादन किया गया और इन्हें 50x50x10 से.मी. के आयाम के पालन पिंजरों में स्थानांतरित किया गया।

विभिन्न संभरण सघनता में नर्सरी में पालित मुक्ता शुक्तियों का दृश्य

पोम्पानो अंगुलिमीनों की देश के विभिन्न भागों में पूर्ति

केरल के विभिन्न मछुआरों को जनवरी से मार्च 2015 तक की अवधि के दौरान मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र द्वारा सिल्वर पोम्पानो के कुल 20,330 अंगुलिमीनों की पूर्ति की गयी। इसके अतिरिक्त 21,500 और 6000 अंगुनिमीनों को कारवार अनुसंधान केन्द्र और मुख्यालय, कोच्ची में भी पूर्ति की गयी।

अष्टमुडी झील में सीपी जैवभार का सर्वेक्षण

अष्टमुडी झील की विभिन्न मेखलाओं में संग्रहित सीपियों की छँटाई और गणना का दृश्य

अष्टमुडी झील में हर वर्ष दिसंबर से फरवरी तक की अवधि सीपी मात्स्यिकी का बंद मौसम है। मात्स्यिकी में नए स्टॉक के प्रवेश का निर्धारण करने के लिए 1 मार्च को नयी मात्स्यिकी की शुरुआत से पहले 9 से 11 फरवरी, 2015 के दौरान झील की 5 विभिन्न मेखलाओं में सीपी जैवभार का सर्वेक्षण किया गया। इसके अनुसार जैवभार 5300 टन आकलित किया गया जो पिछले वर्ष की अपेक्षा 49ऽ कम था। पिछले वर्ष के विपरीत, इस वर्ष कुल 5 मेखलाओं में से 4 मेखलाओं में सीपी की उपस्थिति पायी गयी। सीपी संस्तरों में स्टाक की कमी का कारण शायद समकालीन अंडजनन का अभाव या जल्दी हुआ अंडजनन या सर्वेक्षण करने के दौरान का उच्च ज्वार हो सकता है। अगर जल्दी अंडजनन हुआ तो समय के बाद भी अंडजनन प्रत्याशित है और तद्द्वारा स्टॉक में फिर से उच्च स्तर तक की वृद्धि या पिछले वर्ष के बराबर का स्टॉक प्रत्याशित है। स्टॉक की पुष्टि करने के लिए मई महीने में दुबारा सर्वेक्षण किया जाएगा।

(मोलस्क मात्स्यिकी प्रभाग की रिपोर्ट)

लक्षद्वीप समूह में *स्तेनोट्यूथिस औलानिएन्सिस* के लिए अन्वेषणात्मक सर्वेक्षण

लक्षद्वीप समूह के चारों ओर एफ वी *सिल्वर पोम्पानो* द्वारा 26 फरवरी से 1 मार्च, 2015 के दौरान दो स्टेशनों (9055'08"N, 73039'16"E 10048'20" N, 72040'38"E) में लक्षित समुद्री पर्यटन आयोजित किए गए। अरब सागर में स्तेनोट ट्यूथिस औलानिएन्सिस के अंडों की उपस्थिति पर पता लगाने और संग्रहित करने के लिए दोनों स्टेशनों से आइसक्स किड्ड मिडवाटर ट्राल (आइ के एम टी) जाल उपयुक्त करके स्थूल प्राणिप्लवक के नमूने संग्रहित किए गए। डीप स्काटरिंग लेयर (डी एस एल) में 50 मीटर की गहराई में 30 मिनट तक इको साउन्डर (गरमिन) उपयुक्त करके अनुप्रस्थ दिशा में कर्षण किया गया। प्रयोगशाला में परिरक्षित नमूनों से एस.औलानिएन्सिस के पारा डिंभक (21 डिंभक) प्राप्त हुए। स्टेशन ६ के नमूनों की छँटाई और पहचान करने पर ग्लास ओक्टोपस विट्रेलिडोनेल्लं रिचार्डी, जो अरब सागर में नया रिकार्ड है, को देखा गया।

(मात्स्यिकी पर्यावरण प्रबंधन प्रभाग की रिपोर्ट)

ग्रे बाम्बू सुरा के अंडनिक्षेपित अंड आवरण

मंडपम के अनुसंधान जलजीवशाला में अनुरक्षित ग्रे बाम्बू सुरा *चीलोसिल्लियम ग्रीसियम* ने कई अवसरों पर टैंक में नर मछली के अभाव में मेरमेइड पर्सस को छोडा है। एक बार छोडे गए 20 मेरमेइड पर्सस को निषेचन के लिए पर्याप्त वातन होने वाले एफ आर पी टैंक में अनुरक्षित रखा गया। साधारणतया मेरमेइड पर्सस 70 से 80 दिनों के अंदर निषेचित होते हैं, लेकिन तीन महीनों के बाद इन मेरमेइड पर्सस का निषेचन नहीं होने पर इस पर जांच की और पता चला कि इनमें से तेरह खाली थे और बाकी सात अनुपजाऊ या इनका सड़न हुआ था। कुछ सुरा मछली जाति एक ही संगमन में अंड निषेचन के लिए बीजाणु का संभरण कर सकती है। वर्तमान आकलन से यह व्यक्त होता है कि मादा बाम्बू सुरा नर के अभाव में मेरमेइड पर्सस को जन्म देती है।

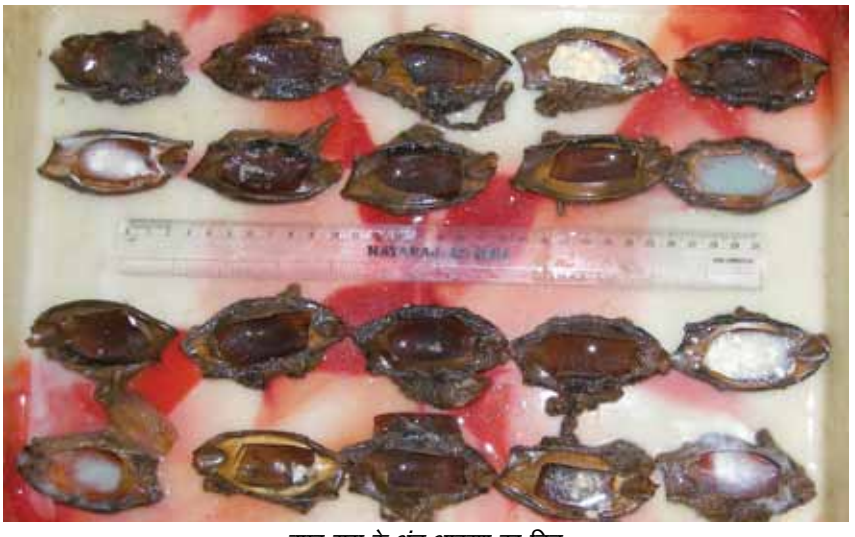

बाम्बू सुरा के अंड आवरण का चित्र

(आर.शरवणन, आइ.सेयद सादिक और ए.षण्मुखनाथन, मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र की रिपोर्ट)

डॉ.ए.गोपालकृष्णन, निदेशक को पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय द्वारा आदेश सं. जे 1701/18/1996 आइ ए III के द्वारा अप्रैल, 2015 के प्रभाव से दो वर्ष की अवधि तक नयी गठित राष्ट्रीय तटीय मेखला प्रबंधन प्राधिकरण के सदस्य के रूप में नामित किया गया है।

ड्यूगोंग का तट पर धंसन

मंडपम के पास मरिक्कयारपट्टिणम में 24 मार्च, 2015 को लगभग 244 से.मी. की लंबाई और 200 कि.ग्रा. भार होने वाले एक नर ड्यूगोंग का धंसन हुआ। इसकी जांच करने पर गुदा के पास गहरा घाव था और मुँह के पार्श्व कुंड में भी घाव था जिस से खून बह रहा था। मृत्यु का यथार्थ कारण पहचान नहीं किया जा सका, फिर भी घावों से यह व्यक्त हुआ कि किसी जहाज़ के प्रोपल्लर या तेजी से आने वाली किसी चीज़ से टकराकर मृत्यु हुई होगी। फरवरी महीने में इस स्थान से करीब 30 कि.मी. की दूरी पर पेरियपट्टिणम के तलियतोप्पु में भी एक मादा ड्यूगोंग की मृत्यु हुई थी।

धंसन हुए ड्यूगोंग का दृश्य

(आर.शरवणन, आइ.सेयद सादिक, ए.षण्मुखनाथन और एन.राममूर्ती, मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र की रिपोर्ट)

लक्षद्वीप समुद्र में कोबिया मात्स्यिकी

लक्षद्वीप समुद्र से राचिसेन्ट्रम कनेडम (लिनेअस, 1766) की उपस्थिति पर पहले रिपोर्ट नहीं की गयी थी। लेकिन 1990 के अंतिम वर्षों में विविध प्रकार के मत्स्यन प्रयासों और मत्स्यन परिचालन के दौरान होने वाले बदलाव के कारण लक्षद्वीप क्षेत्र में विरल मात्रा में कोबिया मछली पायी जाती है। अब मिनिकोय, आन्द्रोत और कल्पेनी द्वीपों में कोबिया मछली का अवतरण किया जाता है और आन्द्रोत में अगस्त-अप्रैल अवधि के दौरान रात्रि मत्स्यन परिचालनों में 50 - 90 से.मी. के आकार ग्रुप की मछलियों का नियमित रूप से अवतरण किया जाता है। हस्त जाल द्वारा पकड़ी जाने वाली मछलियों की लंबाई अधिक होती है।

(श्री के.पी.सेयद कोया, कालिकट अनुसंधान केन्द्र की रिपोर्ट)

हस्त जाल द्वारा पकड़ी गयी कोबिया मछली

कोचीन मात्स्यिकी बंदरगाह में उपास्थिमीन अवतरण

ज़ीब्रा सुरा मछली का अवतरण

कोचीन मात्स्यिकी बंदरगाह में मार्च महीने के अंतिम सप्ताह में ज़ीब्रा सुरा स्टीगोस्टोमा फासिएटम की असाधारण भारी पकड़ हुई। लक्षद्वीप में परिचालित लंबी डोर परिचालन से ये पकडी गयी। उत्तर पश्चिम तट के गहरे समुद्र में 27 मार्च 2014 को परिचालित ड्रिफ्ट गिल जाल एकक द्वारा बडे आकार के तीन मान्टा रे मछलियों, मान्टा बाइरोस्ट्रिस का अवतरण किया गया। इन में से एक मछली के उदर में 101 से.मी. की कुल लंबाई की गर्भस्थ शिशु मछली देखी गयी। मार्च महीने में पन्द्रह काउ नोस रे राइनोप्टीरा जावानिका का भी अवतरण किया गया था, जिन में से एक तिहाई मछलियाँ प्रौढ़ मादा थीं और इनके उदर में एक महीने का भ्रूण देखा गया।

(तलमज्जी मात्स्यिकी प्रभाग की रिपोर्ट)

कोचीन मात्स्यिकी पोताश्रय में सान्टर सीब्रीम का भारी अवतरण

लगभग 100 मी. की गहराई के अपतट समुद्र से सान्टर सीब्रीम चीमेरियस नूफर पकड़ी जाती है। साधारणतया यह करीब 75 से.मी. की लंबाई तक बढ़ती है। ओमान से प्राप्त रिपोर्ट यह सुझाती है कि इन स्पारिडों की लक्षित मात्स्यिकी द्वारा इनका भारी अवतरण किया जाता है। मांगलूर और मुम्बई तट पर कांटा डोर परिचालन से पकडी गयी करीब एक टन सीब्रीमों को दिनांक 13 फरवरी, 2015 को कोचीन पोताश्रय पर लाया गया। यहाँ पहली बार इस मछली का अवतरण हुआ है। मछलियाँ 30-43 से.मी. के कुल लंबाई (टी एल) परास और 0.47 - 2.3 कि.ग्रा. के भार की थीं। मादा मछलियों, जिनकी लंबाई 35 से.मी. थी, के उदर में परिपक्व अंडाशय थे। इन के आंत्र की जांच करने पर खाली देखे गए और कुछ मछलियों के आंत्र में भागिक रूप से पके हुए मोलस्कन कवच देखे गए। इस मछली जाति को आइ यु सी एन सूची में डाटा डेफिश्येन्ट के रूप में जोडा गया है।

(तलमज्जी मात्स्यिकी प्रभाग की रिपोर्ट)

टी एस पी के अंदर पिंजरे में महाचिंगट का पालन

ट्राइबल सब प्लान परियोजना के अंदर महाराष्ट्र के रायगड़ जिले के भर्डकल गाँव में 16-17 जनवरी, 2015 को महाचिंगट के संततियों से युक्त 6 मीटर के व्यास के दो पिंजरों का जलायन किया गया।

अकलमंदी से चुनें - उत्तरदायित्वपूर्ण ग्राहक विकल्प को प्रोत्साहित करने का अभियान

CHOOSE WISELY
Fish Stock Status inputs from CMFRI

Fish Stock Status for ITC Hotels provided by CMFRI-Kochi Nov-14

Classification of stocks

Green - indicates fishery is carried out sustainably and it is a safe to use the product on the menu - Abundant/Less abundant category in CMFRI stock classification
Orange - indicates the fishery is under threat of overexploitation and it maybe avoided in the procurement plan - Declining category in CMFRI stock classification
Red - indicates the fishery is seriously depleted and should be avoided by the procurement plan of the hotel - Deleted or collapsed category in CMFRI stock classification
NMF - Not a major fishery - only sporadic occurrence

Hotel trade name	Scientific name	Common name	Gujarat	Maharashtra	Karnataka	Goa	Kerala	Tamil Nadu	Andhra Pradesh	Orissa	WB
ANCHOVY WHOLE / 60-90GMS	*Stolephorus indicus*	Indian anchovy	NMF	NMF							
BOMBAY DUCK / WHOLE	*Harpadon nehereus*	Bombay duck			NMF	NMF	NMF	NMF			
SEABASS /CALCUTTA BHEKTI /	*Lates calcarifer*	Bhekti/ Seabass	NMF	NMF	NMF	NMF	NMF	NMF	NMF		
RIVER SOLE	*Brachirus panoides*	River sole	NMF	NMF	NMF	NMF	NMF	NMF	NMF		
SEA SOLE	*Cynoglossus spp.*	Malabar Sole/Soles	NMF								
GHOLE / FILLET	*Protonibea diacanthus*	Ghol			NMF	NMF	NMF	NMF			
POMFRET WHITE / WHOLE	*Pampus argenteus*	Silver pomfret									
MURREL / FILLET	*Channa striata*	Snake head/Murrel		NMF	NMF	NMF					
SEA SOLE	*Solea solea*	Common sole/sea sole		NMF							
INDIAN SALMON / FILLET	*Eleutheronema tetradactylum*	Indian Salmon			NMF	NMF		NMF			
SEER / FILLET	*Scomberomorus commerson*	King seer									
KINGFISH / WHOLE	*Rachycentron canadum*	Black kingfish/Cobia									
RED SNAPPER / WHOLE	*Lutjanus spp.*	Red snaspper		NMF							
GROUPER / WHOLE	*Epinephelus spp.*	Groupers	NMF								NMF
TUNA / WHOLE	Tunas - *Thunnus albacares*	Yellowfin tuna								NMF	NMF
TUNA / FILLET	*Thunnus spp.*	Other tunas									
SEA VERAL / FILLET	*Saurida tumbil*	Greater lizard fish									
PEARL SPOT / WHOLE	*Etroplus suratensis*	Pearl spot	NMF	NMF	NMF	NMF				NMF	NMF
KANE FISH	*Sillago sihama*	Kane fish	NMF	NMF						NMF	NMF
MAHI MAHI	*Coryphena hippures*	Mahi mahi		NMF	NMF	NMF				NMF	NMF
HILSA / WHOLE	*Tenualosa ilisha*	Hilsa shad		NMF	NMF	NMF	NMF	NMF			
Coconut para	*Scombroides commersonias*	Talang queenfish	NMF	NMF							
Mackerel	*Rastrelliger kanagurta*	Indiab mackerel									
Pomfrot black	*Parastromateus niger*	Black pomfret									

सी एम एफ आर आइ द्वारा डब्लियु डब्लियु एफ इंडिया को दिया गया मछली स्टॉक इनपुट स्टाटस

टिकाऊ तौर पर पकडी गयी मछलियों को चुनने और अतिविदोहित या समाप्त होने वाली मछलियों की मांग कम करने के द्वारा अतिमत्स्यन रोकने में ग्राहकों की अवगाह अत्यंत महत्वपूर्ण है। पहले सूचित किए जाने के अनुसार, अकलमंदी से मछली चुनना और मछली स्टॉक में हुई कमी के बारे में दूसरों से बताना वेर्ल्ड वाइड फन्ड फोर नैचर द्वारा प्रोत्साहित की जाने वाली अवधारणा है। भारत में, सी एम एफ आर आइ समुद्री मछली स्टॉक का निर्धारण करके वैज्ञानिकों द्वारा विकसित मानदंडों के अनुसार इनका टिकाऊ या गैर-टिकाऊ तौर पर विदोहित स्टॉक के रूप में वर्गीकृत किया जाता है। डॉ.ए.गोपालकृष्णन, निदेशक, सी एम एफ आर आइ और डॉ.सेजल वाराह, कार्यक्रम निदेशक ने एक समझौता पर हस्ताक्षर किया है, जिसके अनुसार डॉ.सेजल वाराह को आइ टी सी होटलों को होटल मेनु और अन्य ग्राहक संसूचनाओं में अंतर्राष्ट्रीय तौर पर अकलमंदी से मछली चुनने की अवधारणा और मछली खरीदने के मार्गनिर्देशों को स्वीकार करने में सहायक तकनीकी निवेश सी एम एफ आर आइ द्वारा प्रदान किया जाएगा। इसके अनुसार ग्राहकों को बेहत्तर मछली चुनने के लिए ट्रैफिक लाइट सिस्टम के समान लाल, संतरा और हरे रंग के वर्गीकरण में संकेत दिया गया है। इस सूची में सम्मिलित हर एक मछली जाति के लिए प्रग्रहण पर आधारित द्रुत स्टॉक स्तर निर्धारण तरीका दिया गया है।

सी एम एफ आर आइ की मार्गरेखा के अनुसार आइ टी सी होटलों में प्रदर्शित मेनु कार्ड

लकड़ी के पिंजरों में महाचिंगट का पालन

तूत्तुकुड़ी के मणपाड उपसागर के दो स्थानों में स्थिर किए गए 3x3x1.5 मी. के आयतन और 30 मि.मी. की जालाक्षि आकार के आंदरिक और बाहरी जाल युक्त कम लागत के लकड़ी के पिंजरों में महाचिंगट का पालन करने का परीक्षण किया गया। समुद्र के निचले भाग से 0.5 मीटर ऊपर पिंजरा स्थिर किए गए। इन में तूत्तुकुडी तट के विभिन्न भागों से संग्रहित 60-80 ग्राम भार, कम आकार और मृदु कवच होने वाले पानुलिरस होमारस और पी.अर्नाटस महाचिंगट जातियों का, प्रति पिंजरे में 1100 से 1250 महाचिंगट की दर में संभरण किया गया। पिंजरे के अंदर कालकारियस पत्थर और प्लास्टिक के टोकरों के पनाहगाह प्रदान किए हैं। महाचिंगटों को हर दिवस अपने शरीर भार के 5-8s की दर में कट लफिश के टुकडे या कम मूल्य वाली मछली से खिलाया गया। लवणता (31-34^{oc}), तापमान (28-32^{oc}) और द्रक्तजैसे पानी की गुणता के प्राचलों का आवधिक रूप से रिकार्ड किए गए। लगभग 25-30 दिनों के अंतराल में बढ़े हुए महाचिंगटों का भागिक संग्रहण किया गया। महाचिंगटों के लंबाई और भार का निर्धारण करने के लिए पाक्षिक अंतराल में नमूना चयन किया गया। प्रतिदिन निर्मोचित कवचों, बचे गए खाद्य और अपशिष्ट निकाले गए। संभरित किए गए महाचिंगटों के 20%, जिनको प्रति किलोग्राम के लिए 240 से 300 रुपए को खरीदा गया था, एक महीने की पालन अवधि के दौरान 100 ग्राम तक बढ़ गए और इन का बाज़ार मूल्य प्रति किलोग्राम के लिए 1200 से 1800 रुपए के बीच है। पालन की अवधि 120 से 150 दिन है और पालन अवधि के बाद पूरे पिंजरे को सफाई और अनुरक्षण के लिए पानी से बाहर ले जाते हैं।

(सी.कालिदास, एल.रंजित, एम.कविता, एन. जेसुराज और एम.एस.मदन, टूटिकोरिन अनुसंधान केन्द्र की रिपोर्ट)

उच्च लवणता युक्त चिंगट तालाबों में सिल्वर पोम्पानो *ट्रकिनोटस ब्लोची* का पालन

गुजरात में नवंबर से फरवरी तक सर्दियों के मौसम में तापमान 9-10दृक घट जाता है और उसी समय लवणता 40 पी पी टी तक बढ जाती है। परिणामस्वरूप इस समय चिंगट पालन निलंबित रखा जाता है और मछुआरे लोग इस अवधि के दौरान पालन करने के लिए किसी दूसरी मछली जाति की ढूँढ में लगे होते हैं। इस संदर्भ में, सी एम एफ आर आइ वेरावल क्षेत्रीय केन्द्र में गुजरात के गिर सोमनाथ जिले के कोडिनार में सर्दियों के मौसम में सिल्वर पोम्पानो मछली का पालन किए जाने का प्रयास किया गया।

सी एम एफ आर आइ मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र की स्फुटनशाला में प्रजनन किए गए पोम्पानो संततियों (1000 संतति) को नवंबर, 2014 में गुजरात लाया गया और तालाब में स्थिर किए गए 3x3x2 मी. के आकार वाले नाइलोन हाप्पा में संभरित किए गए। लगभग 30 दिनों के बाद इन्हें 500 वर्ग मीट र विस्तार के तालाब में छोडा गया। पानी का तापमान दिन में 22ºC और रात में 16ºC था। मछलियों को दिन में तीन बार शरीर भार के 10% की दर में 48% प्रोटीन और 10% वसा युक्त आहार से खिलाया गया। पालन के 120 दिनों बाद मछलियों का संग्रहण किया गया और 93% की अतिजीविताता दर और प्रति दिन 0.26 ग्राम की औसत बढ़ती दर रिकार्ड की गयी। पालन अवधि के दौरान किसी प्रकार की रोगग्रस्तता नहीं देखी गयी और रंग और देखने में मछलियाँ अच्छी दिखती थीं। इस से यह साबित होता है कि पोम्पानो मछली सर्दी के मौसम में पालन करने के लिए अच्छे विकल्प की मछली है। चिंगट तालाबों में सर्दी के मौसम में अतिरिक्त फसल के रूप में इस मछली का पालन किया जा सकता है और लाभ भी प्राप्त किया जा सकता है।

पालन के बाद संग्रहित मछलियों का दृश्य

सीपी पालनकार को राष्ट्रीय पुरस्कार

श्री शंकर कुन्दर, जो उडुप्पी जिले के सालिग्राम का प्रगतिशील सीपी पालनकार और सी एम एफ आर आइ मांगलूर अनुसंधान केन्द्र के सीपी पालन कार्यक्रमों का हितकारी है, को जलकृषि के क्षेत्र के किसानों के उत्कृष्ट योगदान के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुआ। समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण (एम पी ई डी ए) द्वारा दिनांक 10 मार्च, 2015 को कोच्ची में आयोजित कार्यक्रम में पुरस्कार प्रदान किया गया।

खुला सागर पिंजरों में समुद्री शैवाल *काप्पाफाइकस अल्वरेज़ी* का पालन - अतिरिक्त आय का उपाय

गुजरात के तटीय भागों से विदोहित समुद्री शैवाल संपदाएं आजकल समुद्री शैवाल पर आधारित उद्योगों की बढ़ती हुई मांग की पूर्ति के लिए पर्याप्त नहीं होती है। अतः वर्तमान उद्योगों को कच्चे माल की आपूर्ति बढ़ाए जाने के लिए वाणिज्यिक प्रमुख समुद्री शैवालों का पैदावार किया जाना आवश्यक है। ट्राइबल सब प्लान (टी एस पी) कार्यक्रम के अंदर सोमनाथ समुद्र में विशाल प्रायोगिक स्तर के पिंजरा खेत में समुद्री शैवाल काप्पाफाइकस अल्वरेज़ी को समेकित किया गया। पिछले तीन वर्षों से लेकर स्थानीय सिदी जनजातियों द्वारा इन पिंजरों में समुद्री पख मछली और कवच मछली जातियों का लाभ युक्त पालन किया गया था। इस बार विद्यमान अवसंरचना उपयुक्त करते हुए अतिरिक्त आय कमाने के लिए शूली महाचिंगट पानुलिरस पोलीफागस के पालन खेत में समुद्री शैवाल के.अल्वरेज़ी को समेकित करके पालन किया गया। पुराने एच पी डी ई जालों और 2 मीटर के अंतराल में पी वी सी के वलयों के सहारे से आंतरिक बल प्रदान किया गया ताकि ट्यूब जैसा आकार मिल सके और संतुलन के लिए आवश्यक प्लव लगाए गए। पिंजरे के अंदर स्थापित 4 मी. की लंबाई वाले ट्यूबों में लगभग 1 कि.ग्रा. संतति सामग्रियों का संभरण किया गया। पालन के

पिंजरें में समुद्री शैवाल लगाए गए नेट ट्यूब स्थापित करने का दृश्य

60 दिनों के बाद समुद्री शैवाल 11.5 कि.ग्रा. तक बढ़ गए और मई, 2015 महीने में पूरे फसल का संग्रहण करने की प्रत्याशा है। इसी तरह, विद्यमान पिंजरा संरचना उपयुक्त करते हुए ट्राइबल समुदाय के लोगों द्वारा अतिरिक्त आय कमाया जा सकता है। सौराष्ट्र तट के सूत्रपादा, ओखा, पोरबंदर, मियानी और कोडिनार क्षेत्रों को समुद्री शैवाल पालन के लिए चुना गया।

(दिवु डी., मोहम्मद कोया के., सुरेश के.मोज्जादा, महेन्द्र डी.फोफान्डी, श्रीनाथ के.आर.,ज्ञान रंजन दास, विनयकुमार वास की रिपोर्ट)

कोवलम क्षेत्र प्रयोगशाला में तटीय अपरदन से समुद्र जल प्रवेश में नुक़सान

सीएम एफ आर आइ की कोवलम क्षेत्र प्रयोगशाला (के एफ एल) में तटीय अपरदन और समुद्र जल के शक्त आक्रमण से जनवरी, 2015 के अंतिम सप्ताह के दौरान प्रयोगशला में समुद्र जल प्रवेश कराने की सुविधा खराब हो गयी। अब समुद्र के एफ एल के सिर्फ 50 मीटर की दूरी में है। तटीय अपरदन के बाद फरवरी महीने के पहले सप्ताह के दौरान समुद्र जल प्रवेश कराने के 200 मीटर की लंबाई के एच डी पी वी सी पाइप लाइन और स्फुटनशाला के कार्य खराब हो गए और नर्सरी पालन के लिए संभरित संततियों का अनुरक्षण करना मुश्किल हुआ। सरकार के एक टीम द्वारा 14 फरवरी, 2015 को इस स्थान का मुआइना किया गया।

माननीय मात्स्यिकी मंत्री (तमिल नाडु) दिनांक 16 फरवरी, 2015 को मात्स्यिकी आयुक्त डॉ. (श्रीमती) बीला राजेश, आइ ए एस और कई कार्मिकों ने क्षति का निर्धारण करने के लिए यहाँ मुआइना किया। उन्होंने सी एम एफ आर आइ के क्षेत्र प्रयोगशाला का भी मुआइना किया और वहाँ किए जाने वाले अनुसंधान कार्यों की सराहना की। अपरदन हुए पुलिन के भागों में पाइलिंग करने और आगे का अपरदन रोकने के लिए तमिल नाडु सरकार और मात्स्यिकी विभाग ने आवश्यक मात्रा में ग्रनाइट के कंकर प्रदान करने की सहमति दी। इसकी कार्रवाई प्रगति पर है और दिनांक 6 मार्च 2015 को प्रयोगशाला में पानी का प्रवेश फिर से किया जा सका।

स्थापना दिवस समारोह

सीएम एफ आर आइ मुख्यालय और विभिन्न क्षेत्रीय / अनुसंधान केन्द्रों में 3 फरवरी, 2015 को संस्थान के 68 वां स्थापना दिवस मनाया गया। इस दौरान आयोजित खुला सदन में संस्थान की अनुसंधान प्रयोगशालाएं और अन्य सुविधाएं आम लोगों के लिए खुली रखीं। मुख्यालय में इस दिवस कोच्ची नगर और चारों ओर के लगभग 20 शैक्षिक संस्थाओं से करीब 1770 छात्रों और 42 अध्यापकों ने खुले सदन में भाग लिया। इस दौरान उन को संस्थान की अनुसंधान गतिविधियों को समझने और वैज्ञानिकों एवं अनुसंधानकारों से बात करने का अवसर मिला। संस्थान के समुद्री जैवविविधता संग्रहालय, जिसको भारत सरकार द्वारा 'डेसिग्नेटड नेशनल रिपोसिटरी' का स्थान दिया गया है, में समुद्री मछलियों, प्रवालों, स्पंजों, समुद्री साँपों, समुद्री पक्षियों, कच्छपों, समुद्री घासों और समुद्री शैवालों के कुल 22 होलोटाइपों और 2010 नमूनों का प्रदर्शन किया गया है और यह छात्रों के लिए अत्यंत आकर्षक भी था। लगभग 7000 से अधिक वैज्ञानिक पुस्तकों और पत्रिकाओं से युक्त पुस्कालय और समुद्री जलजीवशाला संस्थान के अन्य आकर्षक स्थान हैं।

टूटिकोरिन अनुसंधान केन्द्र के स्थापना दिवस समारोह का उद्घाटन श्रीमती एस.मधुमती, आइ ए एस, आयुक्त, टूटि कोरिन नगरपालिका निगम ने मात्स्यिकी

कारवार अनु. केन्द्र में छात्राओं का मुआइना

मांगलूर अनु. केन्द्र में छात्राओं का मुआइना

मुख्यालय के समुद्री जैवविविधता संग्रहालय में आगंतुक

संयुक्त निदेशक, तमिल नाडु सरकार, डीन, टूटिकोरिन मात्स्यिकी कॉलेज और सी एम एफ आर आइ के कर्मचारी सदस्यों की उपस्थिति में किया। करीब 60 कॉलेजों और स्कूलों के छात्रों ने केन्द्र का मुआइना किया। कारवार अनुसंधान केन्द्र के प्रयोगशालाओं, संग्रहालय, पुस्तकालय और मछली पालन खेत में आए गए छात्रों को डॉ.कृपेश शर्मा, वरिष्ठ वैज्ञानिक ने केन्द्र की अनुसंधान गतिविधियों का विवरण दिया। कोवलम क्षेत्र प्रयोगशाला और मद्रास अनुसंधान केन्द्र, चेन्नई में प्राथमिक विद्यालय और उच्च शिक्षा विद्यालय के लगभग 1200 छात्रों ने मुआइना किया। इन स्कूलों को पेस्टर और मानचित्र प्रदान किए गए। छात्रों ने वैज्ञानिकों से बातचीत की और उनको स्वच्छता की प्रधानता, प्लास्टिक के कम उपयोग, खतरे में पडे गए जीवों और आवास के संरक्षण और पानी के न्यायिक उपयोग के बारे में अवगाह दिया गया। मुम्बई अनुसंधान केन्द्र में संस्थान और समुद्र एवं महासागर के जीवों के बारे में वीडियो फिल्म आदि के प्रदर्शन से स्थापना दिवस मनाया गया। मछुआरों, कॉलेजों के छात्रों, आसपास के विज्ञान संस्थानों और भा कृ अनु प के संस्थानों से करीब 100 लोगों ने प्रदर्शनी में भाग लिया। विषिंजम अनुसंधान केन्द्र में छात्रों के लिए चित्र रचना और प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिताएं आयोजित की गयीं और विजेताओं को प्रमाण पत्र और ट्रोफी प्रदान किए गए।

विषिंजम अनु. केन्द्र में वैज्ञानिकों और छात्रों की आपसी चर्चा

मुख्यालय में प्रदर्शित वेलापवर्ती मछलियों का दृश्य

मुख्यालय में कार्य नमूनों का विवरण देते हुए

टूटिकोरिन की शुक्ति स्फुटनशाला में मुख्य अतिथि श्रीमती एस.मधुमती, आइ ए एस का मुआइना

मद्रास अनुसंधान केन्द्र में छात्रों को अनुसंधान गतिविधियों का विवरण देने का दृश्य

महिला सेल द्वारा अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस समारोह

मुख्यालय में 10 मार्च, 2015 को महिला सेल के तत्वावधान में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया गया। डॉ.लक्ष्मीकुमारी, अध्यक्ष, वेदिक विशन फाउन्डेशन, कोडुंगल्लूर कार्यक्रम में मुख्य अतिथि थी। उन्होंने "समाज में व्यक्तियों का धार्मिक उत्तरदायित्व" विषय पर भाषण दिया।

सी एम एफ आर आइ टूटिकोरिन अनुसंधान केन्द्र में महिला कर्मचारियों द्वारा वृद्धाश्रम, लिटिल सिस्टेर्स ऑफ पुवर, होम फोर दि ऐज्ड के सदस्यों को भोजन देते हुए दिनांक 7 मार्च, 2015 को महिला दिवस मनाया गया।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर डॉ.एम.लक्ष्मीकुमारी भाषण देती हुई

सी एम एफ आर आइ मद्रास अनुसंधान केन्द्र की महिला कर्मचारियों ने चेन्नई के अडयार कैन्सर अस्पताल का मुआइना किया और वहाँ इलाज के लिए भर्ती किए गए बच्चों के चिकित्सार्थ 10000/- रुपए का योगदान किया।

महिला सेल द्वारा दिनांक 20 फरवरी 2015 को कोच्ची में डॉ.जेकब वडक्कन्चेरी, नैचर लाइफ इन्टरनेशनल, एरणाकुलम द्वारा "रोगों के बिना ज़िंदगी" विषय पर विशेष भाषण आयोजित किया गया।

डॉ.जेकब वडक्कन्चेरी प्राकृतिक चिकित्सा पर भाषण देते हुए

गणतंत्र दिवस समारोह

मुख्यालय और विभिन्न क्षेत्रीय एवं अनुसंधान केन्द्रों में गणतंत्र दिवस मनाया गया।

डॉ.ए.गोपालकृष्णन, निदेशक वेरावल क्षेत्रीय केन्द्र के गणतंत्र दिवस समारोह में

प्रदर्शनियाँ

निम्नलिखित कार्यक्रमों के दौरान आयोजित प्रदर्शनियों में सी एम एफ आर आइ ने भाग लिया:

- जवहर लाल नेहरु अंतर्राष्ट्रीय स्टेडियम, कलूर, कोच्ची में 5-8 फरवरी 2015 के दौरान आयोजित वेल्र्ड ओशियन सयन्स कोंग्रेस-2015
- संस्कृत कॉलेज, तृप्पूणित्तुरा में 14-20 फरवरी 2015 के दौरान आयोजित 'शतवत्सराघोषंगल'
- फिशरीस टेकनोक्राफ्ट्स फोरम और केन्द्रीय खारा पानी जलकृषि संस्थान द्वारा संयुक्त रूप से 28 जनवरी 2015 को सी आइ बी ए, चेन्नई में "समुद्री बास मछली की जलकृषि - स्थिति और वाणिज्यिक उत्पादन की ओर साध्यता" विषय पर आयोजित कार्यशाला
- एम.एस.स्वामिनाथन अनुसंधान फाउन्डेशन द्वारा ग्रामीण ज्ञान अभियान कन्वेन्शन के सिलसिले में 2-4 फरवरी 2015 के दौरान चेन्नई में आयोजित सूचना संसूचना प्रौद्योगिकियों से संबंधित नवाचारों और ज्ञान उत्पादों के प्रदर्शन से संबंधित तकनोलजी पवलियन
- शिक्षा विभाग, तमिल नाडु सरकार और अन्ना विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में 26-28 फरवरी 2015 को क्यून मेरीस कॉलेज, चेन्नई में आयोजित चेन्नई विज्ञान समारोह
- दक्षिण गोवा के नवेलिम में 29 जनवरी से 1 फरवरी 2015 और उत्तर गोवा के मॉपुसा में 5 से 8 फरवरी 2015 के दौरान आयोजित 2वां अक्वा गोवा मेगा फिश फेस्टिवेल।

सी एम एफ आर आइ विषिंजम अनुसंधान केन्द्र का टीम अक्वाशो 2015 में उत्तम समुद्री जलजीवशाला ट्रोफी के साथ

डॉ.विपिन कुमार वेल्र्ड ओशियन सयन्स कोंग्रेस - 2015 में 3वां उत्तम पवलियन का पुरस्कार स्वीकार करते हुए

श्री लक्ष्मीकांत परसेकर, माननीय मुख्य मंत्री, गोवा अक्वा गोवा 2015 के दौरान सी एम एफ आर आइ स्टाल का मुआइना करते हुए

मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र में स्थापित समुद्री अलंकारी मछली ब्रूडबैंक सुविधा

मन्नार खाड़ी जैवमंडल संरक्षण ट्रस्ट (जी ओ एम बी आर टी), तमिल नाडु सरकार के अंदर मन्नार खाड़ी क्षेत्र की मछुआरिनों के लिए निधिबद्ध परियोजना 'मन्नार खाड़ी क्षेत्र की मछुआरिनों के लिए चुनी गयी अलंकारी मछलियों के संतति उत्पादन के लिए क्षमता वर्धन' के अंदर सुविधाएं विकसित की गयीं। इस क्षेत्र के अलंकारी मछली पालन को मूल्यवान समर्थन दिए जाने के लिए 350 लिटर की क्षमता युक्त 51 आर सी सी सिमेन्ट टैंक तैयार किए गए हैं।

हिन्दी कार्यशालाएं

संस्थान मुख्यालय और क्षेत्रीय / अनुसंधान केन्द्रों में नीचे दिए गए विवरण के अनुसार बोलचाल की हिन्दी कार्यशालाएं आयोजित की गयीं:

कोच्ची में दिनांक 24 फरवरी 2015 को श्री रमेश प्रभु, मुख्य राजभाषा अनुवादक, हिन्दुस्तान पेट्रोलियम कार्पोरेशन लिमिटड, कोच्ची ने मुख्यलय के 22 अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए क्लास चलाया।

कारवार अनुसंधान केन्द्र में दिनांक 19 मार्च 2015 को श्रीमती भारती दोड्डामणी, असोसिएट प्रोफसर, शिवजी कॉलेज ऑफ आर्ट्स एंड सयन्स, कारवार ने केन्द्र के कार्मिकों के लिए क्लास चलाया।

मद्रास अनुसंधान केन्द्र में श्री हरि ओम रस्तोगी, सहायक निदेशक (राजभाषा), हिन्दी शिक्षण योजना, चेन्नई ने 'बोलचाल की हिन्दी' कार्यशाला आयोजित की।

मांगलूर अनुसंधान केन्द्र में 1 अप्रैल 2015 को श्री वागीश्वरी शिवराम, सेवामुक्त अध्यापक, कैनरा शैक्षिक संस्था एवं सार्वजनिक वक्ता ने केन्द्र के कर्मचारियों के लिए क्लास चलाया।

राजभाषा निरीक्षण

श्री राकेश कुमार, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी ने 25 फरवरी 2015 को सी एम एफ आर आइ कारवार अनुसंधान केन्द्र के राजभाषा कार्यान्वयन की गतिविधियों का निरीक्षण किया।

डॉ.मदन मोहन, सहायक महानिदेशक (समुद्री मात्स्यिकी), भा कृ अनु प, नई दिल्ली, डॉ.ए.गोपालकृष्णन, निदेशक, सी एम एफ आर आइ और श्रीमती ई.के.उमा, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी (हिन्दी) ने 28 मार्च 2015 को मांगलूर अनुसंधान केन्द्र के राजभाषा कार्यान्वयन का निरीक्षण किया।

रा भा का स बैठक

संस्थान की राजभाषा कार्यान्वयन समिति (रा भा का स) की तिमाही बैठक 31 मार्च, 2015 को डॉ.ए.गोपालकृष्णन, निदेशक की अध्यक्षता में आयोजित की गयी। बैठक में जनवरी-मार्च 2015 अवधि के दौरान की राजभाषा गतिविधियों पर चर्चा की गयी और आगे के सुधार के लिए आवश्यक निर्णय लिए गए।

क्षेत्रीय राजभाषा वार्षिक सम्मेलन

श्रीमती ई.के.उमा, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी (हिन्दी) ने राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, नई दिल्ली और मांगलूर नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा संयुक्त रूप से दिनांक 27 मार्च, 2015 को ओशियन पेर्ल होटल, मांगलूर में आयोजित क्षेत्रीय राजभाषा वार्षिक सम्मेलन में भाग लिया। श्री वाजुभाय रुदाबाइ वाला, माननीय राजपाल, कर्नाटक राज्य कार्यक्रम में मुख्य अतिथि रहे। श्रीमती स्नेहलता कुमार, सचिव, श्रीमती पूनम जुनेजा, संयुक्त सचिव और श्री हरीन्द्र कुमार, निदेशक (कार्यान्वयन), राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, नई दिल्ली भी कार्यक्रम में उपस्थित थे।

मात्स्यिकी विज्ञान के क्षेत्र में वर्ष 1954 से लेकर प्रमुख इंडियन जर्नल

ISSN 0970-6011

वार्षिक चंदा
रु.1000 $ 100
निदेशक, सी एम एफ आर आइ,
कोच्ची - 682 018
से संपर्क करें
इन्टरनेशनल इंपैक्ट फैक्टर 0.195
एन ए ए एस रेटिंग 6.2

फिजी गणतंत्र के प्रतिनिधियों का सी एम एफ आर आइ में मुआइना

माननीय कृषि, समुद्री विकास एवं राष्ट्रीय आपात प्रबंधन मंत्री, फिजी गणतंत्र श्री इनिया सेरुइरतु के नेतृत्व में प्रतिनिधियों ने भारत में भ्रमण करने के दौरान सी एम एफ आर आइ में भी मुआइना किया। कृषि मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (भा कृ अनु प) के माध्यम से नयाचार एवं संपर्क अधिकारी श्री एम.के.शर्मा द्वारा मुआइना सुगम बना दिया। प्रतिनिधि मंडल में, फिजी में भारत का उच्चायुक्त एच.ई.योगेश करण, कृषि के कार्यकारी स्थायी सचिव श्री उरैया वाइबूटा, प्रथम सचिव श्री साकीसी वाइकेरे और वरिष्ठ अर्थशास्त्रज्ञ श्री ओसिया राटूयवा सम्मिलित थे। उन्होंने दिनांक 29 जनवरी को केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान का मुआइना किया और सी एम एफ आर आइ के तकनीकी मार्गदर्शन से की जाने वाली पिंजरा मछली पालन गतिविधियों का निरीक्षण करने के लिए 30 जनवरी 2015 को कोच्ची के पनम्पुकाड के मछली पालन पिंजरों का भी मुआइना किया। उत्तम मछली पालन पर नवीनतम प्रौद्योगिकियों की अद्यतन जानकारी प्राप्त करना मुआइना का उद्देश्य था। प्रतिनिधि मंडल ने सी एम एफ आर आइ के पिंजरा मछली पालन कार्यक्रम की सराहना की।

फिजी प्रतिनिधि मंडल सी एम एफ आर आइ संग्रहालय में

कोच्ची के पिंजरा मछली पालन स्थान का मुआइना

श्री के.नन्दकुमार, आइ ए एस सी एम एफ आर आइ मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र का निरीक्षण करते हुए

डॉ.बी.मीनाकुमारी, उप महानिदेशक (मात्स्यिकी), भा कृ अनु प ने 24 जनवरी 2015 को सी एम एफ आर आइ मुम्बई अनुसंधान केन्द्र का मुआइना किया।

डॉ.जे.के.जेना, निदेशक, राष्ट्रीय मछली आनुवंशिक संपदा ब्यूरो और डॉ.अरुण एस. निनावे, वैज्ञानिक जी एवं सलाहकार, जलकृषि एवं समुद्री जैवप्रौद्योगिकी, जैवप्रौद्योगिकी विभाग, नई दिल्ली ने 3 फरवरी 2015 को सी एम एफ आर आइ टूटिकोरिन अनुसंधान केन्द्र का मुआइना किया।

श्री के.नन्दकुमार, आइ ए एस, जिलाधीश, रामनाथपुरम ने 27 मार्च 2015 को सी एम एफ आर आइ मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र का मुआइना किया और स्टेट बालन्स्ड ग्रोथ फन्ड स्कीम के अंदर मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र की तकनीकी सहायता से चालू किए जाने वाले दो समुद्री मछली पालन पिंजरों का निरीक्षण किया।

कारवार और मांगलूर अनुसंधान केन्द्रों में क्यू आर टी का मुआइना

पंचवर्षीय निरीक्षण टीम (क्यू आर टी), जिसमें डॉ.एन.आर.मेनोन, डीन (सेवामुक्त), स्कूल ऑफ मराइन सयन्सस, कोच्ची एवं अध्यक्ष, क्यू आर टी, डॉ.ए.डी. दिवान, सहायक महानिदेशक (सेवामुक्त), डॉ.प्रभुदेवा, मात्स्यिकी अनुसंधान एवं सूचना केन्द्र, हेब्बाल, बांगलूर, डॉ.श्रीनिवास कुमार, अध्यक्ष, अड्वाइसरी सर्वीसस एवं साटलाइट ओशियनोग्राफी ग्रुप, आइ एन सी ओ आइ एस और डॉ.वी.कृपा, सदस्य सचिव सम्मिलित थे, ने दिनांक 20 और 21 जनवरी 2015 को क्रमशः सी एम एफ आर आइ कारवार और मांगलूर अनुसंधान केन्द्रों का मुआइना किया।

क्यू आर टी कारवार और मांगलूर अनुसंधान केन्द्र की स्फुटनशाला सुविधा का निरीक्षण करते हुए

प्रभारी वैज्ञानिक, मांगलूर अनुसंधान केन्द्र द्वारा केन्द्र की गतिविधिया पर प्रस्तुतीकरण करती हुई

कार्यशाला / प्रशिक्षण

"समुद्री जैवविविधता परिरक्षण एवं प्रबंधन में नवीनतम विकास" विषय पर ग्रीष्मकालीन पाठ्यक्रम

सीएम एफ आर आइ, कोच्ची में 16 फरवरी से 8 मार्च 2015 तक की अवधि के दौरान 20 सहभागियों के लिए भा कृ अनु प द्वारा प्रायोजित ग्रीष्मकालीन पाठ्यक्रम का आयोजत किया गया। ग्रीष्मकालीन पाठ्यक्रम का उद्घाटन 16 फरवरी 2015 को डॉ.वी.कृपा, प्रधान वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष, मात्स्यिकी पर्यावरण एवं प्रबंधन प्रभाग, सी एम एफ आर आइ ने किया। समुद्री आवास व्यवस्थाओं की जैवविविधता अध्ययन के विभिन्न पहलुओं पर प्रशिक्षण पदान करना ग्रीष्मकालीन पाठ्यक्रम का उद्देश्य था। जैवविविधता का अध्ययन करने की प्रणालियों जैसे जाति पहचान, जैवविविधता सूचक, जातियों का परिरक्षण और जैवविविधता का मूल्यांकन पर चर्चा की गयी। पाठ्यक्रम में विविध सत्रों में समुद्री जैवविविधता के निर्धारण एवं संरक्षण, जैवविविधता निर्धारण में R सोफ्टवेयर का प्रयोग, जैवविविधता का आर्थिक मूल्यांकन और सुभेद्यता निर्धारण, आण्विक वर्गिकीविज्ञान और इसका प्रयोग, समुद्री मछली कोशिका रेखाएं, समुद्री सूक्ष्मजीव विविधता, समुद्री संरक्षित क्षेत्र और जातियाँ, समुद्री शैवाल, मैंग्रोव आवास तंत्र, सी आइ टी ई एस और भारत में मात्स्यिकी

ग्रीष्मकालीन पाठ्यक्रम के उद्घाटन का दृश्य

प्रबंधन के लिए जलीय आवास व्यवस्था के मोडलिंग आदि विषयों पर क्लास चलाए गए।

28 फरवरी 2015 को नीन्डकरा मत्स्यन पोताश्रय, तोट्टप्पल्ली मछली अवतरण केन्द्र और पुरक्काड मत्स्यन गाँव में सहभागियों को लेकर गए और इन स्थानों में विभिन्न तरह के यानों और गिअरों द्वारा किए जाने वाले मछली अवतरण पर अवगाह मिलने का अवसर हुआ। कोल्लम के अष्टमुडी झील की सीपी मछुआरिनों के साथ आपसी विनियम भी आयोजित किया गया। डॉ.वी.श्रीरामचन्द्र मूर्ती, डॉ.ए.डी.दिवान, डॉ.वी.के.वेंकटरमणी, श्री सी. एम.मुरलीधरन (बी ओ बी एल एम ई) और डॉ. सतीश सहायक (एम पी ई डी ए) आदि अतिथि वक्ताओं द्वारा विशेष भाषण भी आयोजित

डॉ.ए.डी.दिवान द्वारा भाषण

व्यावहारिक सत्र का दृश्य

डॉ.ए.गोपालकृष्णन, निदेशक प्रमाण पत्र प्रदान करते हुए

किए गए। ग्रीष्मकालीन पाठ्यक्रम का समापन कार्यक्रम दिनांक 07 मार्च 2015 को आयोजित किया गया, जिसमें डॉ.ए.गोपालकृष्णन, निदेशक, सी एम एफ आर आइ अध्यक्ष रहे और उन्होंने भागीदारों को प्रमाणपत्र प्रदान किए। डॉ.पी.लक्ष्मीलता, प्रधान वैज्ञानिक और पाठ्यक्रम सह-निदेशक, समुद्री जैवविविधता प्रभाग ने कृतज्ञता अदा किया।

'चुनी गयी अलंकारी मछलियों का संतति उत्पादन' पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

मन्नार खाड़ी जैवमंडल संरक्षण ट्रस्ट (जी ओ एम बी आर टी) की निधिबद्ध परियोजना 'मन्नार खाड़ी क्षेत्र की मछुआरों के लिए चुनी गयी अलंकारी मछलियों के संतति उत्पादन के लिए क्षमता वर्धन' के अंदर मन्नार खाड़ी क्षेत्र की मछुआरिनों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के अंदर 27 से 29 जनवरी और 23 से 25 मार्च 2015 के दौरान आयोजित दो सत्रों में तंगच्चिमडम, सवरियार नगर, राजा नगर, अन्तोनियारपुरम, तेरकुवाडी, कुन्डुकल और पाम्बन गाँवों से कुल 69 मछुआरिनों ने भाग लिया। डॉ.ए.के.अब्दुल नासर, प्रभारी वैज्ञानिक, मडपम क्षेत्रीय केन्द्र और डॉ. के.ईश्वरन, प्रधान वैज्ञानिक, सी एस एम सी आर आइ, मंडपम कैंप ने प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन किया। श्री आर.सेन्तिल कुमार, जैवविविधता कार्यक्रम अधिकारी, जी ओ एम बी आर टी ने बधाई भाषण दिया। इस दौरान क्लाउन मछलियों के अंडशावक विकास, प्रजनन, पालन तकनीक, जीवित खाद्य संवर्धन, कोपीपोड संवर्धन और आर्टीमिया का स्फुटन, जीवित खाद्य संवर्धन, पानी की गुणता एवं रोग प्रबंधन आदि विषयों पर व्यावहारिक प्रशिक्षण आयोजित किया गया। मन्नार खाड़ी क्षेत्र की समुद्री अलंकारी मछलियों की जैवविविधता, अलंकारी मछलियों की लघु पैमाने की स्फुट नशाला की तैयारी और इसका आर्थिक विश्लेषण, स्फुटनशाला प्रारंभ करने के लिए सरकार की योजनाओं पर सूचना आदि विषयों पर भी प्रशिक्षण के दौरान चर्चा की गयी। प्रशिक्षणार्थियों की उपलब्धियों एवं प्रोत्साहन के स्तर की पहचान करने हेतु थीमाटिक अप्रीसिएशन टेस्ट चलाया गया। भागीदारों से इसकी प्रतिक्रिया प्राप्त हुई और इसके अनुसार प्रशिक्षण प्रभावकारिता सूचक का आकलन किया गया। श्री एम.शाहुल हमीद, परिस्थिति विकास अधिकारी (जी ओ एम बी आर टी), डॉ.आइ.राजेन्द्रन और डॉ.आर.जयकुमार (सी एम एफ आर आइ) ने पुरस्कारों का वितरण किया। डॉ.बी. जोनसन, परियोजना का प्रधान अन्वेषक ने कृतज्ञता अदा किया।

(मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र की रिपार्ट)

प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन

करके सीखना - आटीमिया संग्रहण का व्यावहारिक सत्र

प्रशिक्षण सत्र का दृश्य

संकाय सदस्यों के साथ सहभागियों का दृश्य

समुद्री संवर्धन पर अखिल भारतीय नेटवर्क परियोजना की पूर्व शुभारंभ कार्यशाला

सी एम एफ आर आइ कारवार अनुसंधान केन्द्र में 25-26 फरवरी, 2015 के दौरान समुद्री संवर्धन पर अखिल भारतीय नेट वर्क परियोजना की पूर्व शुभारंभ कार्यशाला आयोजित की गयी। डॉ.ए.गोपालकृष्णन, निदेशक ने कार्यशाला का उद्घाटन किया और नेटवर्क परियोजना की अवधारणा और परियोजना के अंदर याजनाबद्ध समग्र गतिविधियों का विवरण दिया। डॉ.के.के.फिलिप्पोस, परियोजना समन्वयक ने प्रतिनिधियों का स्वागत किया। इस अवसर पर डॉ.जी.गोपकुमार, प्रधान वैज्ञानिक (सेवानिवृत्त) और डॉ.दास, डीन, डाब्लियु बी यु ए एफ एस, कोल्कत्ता ने बधाई भाषण दिया। कार्यशाला में परियोजना में सम्मिलित सभी केन्द्रों के वैज्ञानिकों ने भाग लिया और चर्चा की गयी।

डॉ.ए.गोपालकृष्णन, निदेशक पूर्व शुभारंभ कार्यशाला का उद्घाटन करते हुए

'बेलमाउन्ट फोरम जी यु एल एस परियोजना प्रशिक्षण कार्यशाला वैश्विक अवबोध एवं स्थानीय समाधान के लिए सीखनाः समुद्र पर निर्भर तटीय समुदायों की सुभेद्यता घट ाना' की परियोजना प्रारंभ एवं प्रशिक्षण दिनांक 25 फरवरी 2015 को तिरुवनंतपुरम के पून्तुरा में आयोजित किए गए। श्री श्रीकण्ठन, संयुक्त निदेशक, मात्स्यिकी कार्यक्रम में मुख्य अतिथि थे। श्री मोहम्मद इकबाल, काउन्सिलर, तिरुवनंतपुरम कार्पोरेशन ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया। डॉ.पी.एस.स्वातिलक्ष्मी ने सभा का स्वागत किया और डॉ.एस.जास्मिन ने मछुआरा समुदाय के उन्नयन के लिए सी एम एफ आर आइ की प्रमुख गतिविधियों की रूपरेखा दी। डॉ.श्याम एस.सलिम, कार्यशाला का समन्वयक ने परियोजना पर संक्षिप्त विवरण दिया और इसके बाद प्रशिक्षण प्रणाली पर विवरण और सर्वेक्षण के तकनीकों पर व्यावहारिक अनुभव की सुविधा के लिए नकली फील्ड सर्वेक्षण आयोजित किए गए। चुने गए अध्ययन स्थानों में जलवायु परिवर्तन के प्रतिरोध में शमन कार्यों के अनुकूलन में स्टेकहोल्डरों के बीच संबंध स्थापित करना परियोजना का लक्ष्य था।

(एस ई ई टी टी प्रभाग की रिपोर्ट)

जलवायु लचीला कृषि में राष्ट्रीय नवोन्मेष (एन आइ सी आर ए) परियोजना पुनरीक्षण कार्यशाला तलमज्जी मात्स्यिकी प्रभाग द्वारा 29-30 जनवरी, 2015 के दौरान सी एम एफ आर आइ में आयोजित की गयी। एन आइ सी आर ए से जुडे हुए मुख्यालय के सहयोगियों, केन्द्रों के समन्वयकारों और डॉ.ई.विवेकानन्दन, परियोजना के परामर्शक ने कार्यशाला में भाग लिया।

कारवार अनुसंधान केन्द्र में मछुआरों के लिए व्यावहारकि प्रशिक्षण का दृश्य

"पर्यावरण अवनति के पहल और तटीय एवं समुद्री जैवविविधता" विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम मोहम्मद सातक पोलीटेकनीक कॉलेज, कीलकरै के संकाय विकास कार्यक्रम के अंदर तमिल नाडु के विभन्न पोलीटेकनीकों के छात्रों के लिए 25 फरवरी 2015 को मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र में आयोजित की गयी। डॉ.आइ.राजेन्द्रन, वरिष्ठ वैज्ञानिक ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया। डॉ.आर.शरवणन, वैज्ञानिक ने कार्यक्रम का समन्वयन किया।

जे एन एस एफ कार्यशालाएं - प्रोफसर डॉ. ट्रेवर प्लाट (जवहरलाल नेहरु विज्ञान फेलो) और डॉ.जे.जयशंकर और डॉ.ग्रिन्सन जोर्ज (मात्स्यिकी संपदा निर्धारण प्रभाग, सी एम एफ आर आइ) के संयुक्त सहयोग से निम्नलिखित कार्यशालाएं आयोजित की गयीः

"दूर से लगाए गए डेटा उपयुक्त करके शक्य मात्स्यिकी उपलब्धता के आकलन का वैज्ञानिक आधार" दिनांक 6 और 7 फरवरी, 2015

"उत्तर हिन्द महासागर में मात्स्यिकी संपदाओं के उतार-चढाव के लिए महासागरीय आधार" दिनांक 9 और 10 फरवरी, 2015

केरल के 15 मछुआरों के लिए 8-9 जनवरी 2015 को कारवार अनुसंधान केन्द्र में खुला सागर पिंजरा मछली पालन पर व्यावहारकि प्रशिक्षण कार्यक्रम।

शशिकुमार,जी., के.एस.मोहम्मद, पी.रोहित और जी.संपतकुमार 2015. मछली समुच्चयन उपाय उपयुक्त करके कटल फिश मात्स्यिकी पर नीति मार्गदर्शन. सी एम एफ आर आइ मार्च. फिश पेलिसी सीरीस 1, 56 पृष्ठ

सी एम एफ आर आइ, एफ आर ए डी 2015. प्रशिक्षण मानुअल

"मछली स्टॉक निर्धारण एवं प्रबंधन"

सी एम एफ आर आइ, एफ आर ए डी 2015. भारत के समुद्री मछली अवतरण - 2014

अनुसंधान सलाहकार समिति बैठक का आयोजन

संस्थान की अनुसंधान सलाहकार समिति (आर ए सी) की बैठक 26-27 मार्च 2015 के दौरान संस्थान मुख्यालय में डॉ.बी.एन.देशाय की अध्यक्षता में आयोजित की गयी। आर ए सी के अन्य सदस्य डॉ.मदन मोहन, डॉ.सी.बी.एस.दत्त, डॉ.ई.विवेकानन्दन, डॉ.आर.आल्फ्रेड शेल्वकुमार और डॉ.ए.गोपालकृष्णन, निदेशक, सी एम एफ आर आइ थे।

प्रभागों के अध्यक्ष और क्षेत्रीय एवं अनुसंधान केन्द्रों के प्रभारी वैज्ञानिकों ने बैठक में भाग लिया और आर ए सी बैठक से पहले प्रस्तुतीकरण किए।

समापन दिवस में अध्यक्ष, आर ए सी ने सी एम एफ आर आइ प्रकाशन "मछली समुच्चयन उपाय उपयुक्त करके कटल फिश मात्स्यिकी पर नीति मार्गदर्शन" का औपचारिक रूप से विमोचन किया।

आर ए सी बैठक का दृश्य

सी एम एफ आर आइ प्रकाशन के विमोचन का दृश्य

पुरस्कार

डॉ.संध्या सुकुमारन, वैज्ञानिक, समुद्री जैवप्रौद्योगिकी प्रभाग को अपने "म्यूटाजीन के संदर्भ में क्रोनिक जीनोटोक्सिसिटी के प्रति लैंगिक और अलैंगिक आर्टीमिया की मल्टी जेनरेशनल डेमोग्राफिक प्रतिक्रियाएं" शीर्षक के लेख के लिए टेयलर एंड फ्रान्सिस कोमनवेल्थ स्कोलरशिप कमीशन का उत्कृष्ट पत्रिका लेख पुरस्कार 2014 प्राप्त हुआ। लेख का सहलेखक अलास्टेयर ग्रान्ट थे और पत्रिका अक्वाटिक टोक्सिकोलजी में यह लेख प्रकाशित किया गया।

श्री अखिलेश के.वी., वैज्ञानिक को अपने "भारत के दक्षिण पश्चिम तट के गभीर सागर कोन्ड्रिक्तियन्स के मात्स्यिकी और जीवविज्ञान" शीर्षक के लेख के लिए कोचीन विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (सी यु एस ए टी), से मराइन बयोलजी में डॉक्टर ऑफ फिलोसफी उपाधि प्रदान की गयी। उन्होंने डॉ.एन.जी.के.पिल्लै, भूतपूर्व प्रधान वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष, वेलापवर्ती मात्स्यिकी प्रभाग के मार्गदर्शन से काम किया।

कृ वि कें द्वारा उत्पाद का ब्रान्डिंग

सी एम एफ आर आइ की सहकारिता से कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा कडमाकुडी, पिषला और नायरम्बलम के चुने गए पोक्कली खेतों में पखमछली-चावल के एकीकृत पालन पर एन आइ सी आर ए (राष्ट्रीय जलवायु लचीला कृषि नवाचार) प्रौद्योगिकी का निदर्शन किया गया। इस उद्यम के दो लक्ष्य ये थे कि परंपरागत पोक्काली किसानों का आय बढ़ाना और उपभोक्ताओं को प्राकृतिक जैविक फसल की उपलब्धता सुनिश्चित करना। पोक्काली आवास तंत्र में पिछले फसल के भूसे, दलदला मृदा और लवण पानी एक साथ मिलकर यहाँ पालन की जाने वाली मछलियों को विशेष प्रकार का स्वाद होता है। लेकिन इन खेतों से संग्रहित मछली और अन्य स्थानों से संग्रहित कम गुणता वाली मछलियों को मिश्रित करके बाज़ार में लाया जाता है। अतः एरणाकुलम जिले के विशेष प्रकार के परंपरागत पोक्काली खेतों में पालन किए गए प्राकृतिक जैविक फसल जैसे चावल / मछली / चिंगट का ब्रान्डिंग किए जाने और तत्द्वारा उत्पादकों को बाज़ार में अच्छा दाम मिलने के लिए कदम उठाया गया है। सुरक्षित और विशेष स्वाद युक्त जैविक तौर पर उत्पादित मछली पर अवगाह जगाने के पहले कदम के रूप में अप्रैल महीने के पहले सप्ताह में ईस्टर के दौरान कई खेतों में मछली संग्रहण मेलाओं का आयोजन किया गया और इसका मीडिया और आम लोगों से अच्छा प्रोत्साहन मिला।

KVK To Brand Pokkali Produce

साटलाइट पेर्लस्पोट संतति उत्पादन केन्द्र की शुरुआत

राज्य में पेर्लस्पोट मछली की बढ़ती हुई मांग की पूर्ति के उद्देश्य से एरणाकुलम के कुम्बलंगी में पेर्लस्पोट संतति उत्पादन केन्द्र स्थापित किया गया। इस पहल के अंदर उत्पादन किए गए मछली संततियों का पहला विपणन एरणाकुलम के कुम्बलंगी के श्री षिबु कोच्चेरी के खेत में स्थित केन्द्र से 19 जनवरी, 2015 को किया गया।

कृषि विज्ञान केन्द्र के तरकारी कार्यदल कार्यात्मक बन गया

शहरों में जैविक तरकारी का उत्पादन करने के लिए कृषि विज्ञान केन्द्र ने एक कार्यदल का रूपायन किया है। इसके अनुसार कृ वि कें के कार्मिक गण प्रशिक्षण और व्यावहारिक निदर्शन देते हैं और उन्हें द्वारा शहर निवासियों की सुविधानुसार 100 दिनों की कार्यविधियों के चार्ट का वितरण किया गया, जिसके अनुसार वे तरकारी पैदावार कर सकते हैं।

कृषि विज्ञान केन्द्र की वैज्ञानिक सलाहकार समिति बैठक

डॉ. ए.गोपालकृष्णन, निदेशक, सी एम एफ आर आइ की अध्यक्षता में कृ वि कें की वैज्ञानिक सलाहकार समिति (एस ए सी) की बैठक सी एम एफ आर आइ, कोच्ची में दिनांक 10 फरवरी, 2015 को आयोजित की गयी। डॉ.श्रीनाथ दीक्षित, मेखला परियोजना निदेशक और डॉ. पी.वी.बालचन्द्रन, निदेशक, विस्तार, केरल कृषि विश्वविद्यालय भी उपस्थित थे। बैठक में, किसानों के बीच हाल की प्रौद्योगिकियों का प्रचार करने और कृ वि कें के उत्पादों के विपणन के लिए मोबाइल बिक्री काउन्टर का प्रारंभ, मृदा परीक्षण सुविधा का प्रारंभ और सी एम एफ आर आइ में अब चालू विपणन काउन्टर के विस्तार करना आदि विषयों पर निर्णय लिए गए। समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान से संबंधित प्रौद्योगिकियों के प्रदर्शनार्थ जिले के किसी तटीय गाँव का दत्तकग्रहण करने का भी निर्णय लिया गया।

केवल पेर्ल स्पोट मछली के लिए खाद्य का रूपायन

राष्ट्रीय जलवायु लचीला कृषि नवाचार (एन आइ सी आर ए) परियोजना के अंदर केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान द्वारा केवल पेर्ल स्पोट मछली के लिए विकसित पेर्लप्लस विपणन नामक खाद्य का लाँचिंग कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा किया गया। खाद्य में 47% प्रोटीन और 6% वसा पांच विभिन्न फीडग्रैन आकारों में मौजूद हैं, वे हैं PS1 (250µm), PS2(500µm), PS3(1000µm), PS4(1.4µm) और PS5(2µm)। इनमें से PS1 और PS2 करीब 2.5 से.मी. तक के आकार की पोना मछलियों के लिए, PS3 और PS4 8 से.मी. तक के आकार के अंगुलिमीनों के लिए और PS5 10 से.मी. से ऊपर के आकार के अंगुलिमीनों के लिए उचित हैं। खाद्य 1 कि.ग्रा. और 5 कि.ग्रा. के पैकेटों में सी एम एफ आर आइ-ए टी आइ सी/ कृ वि कें बिक्री काउन्टर में उपलब्ध हैं।

सब्जियों के लिए सटीक कृषि का निदर्शन

करेला में कम कीटनाशकों का प्रयोग करने और बाज़ारों में स्थानीय किस्मों का प्रचार करने के लिए सटीक पालन मोड्यूल का निदर्शन किया गया। वेंचुरी सिस्टम और प्लास्टिक मल्चिंग द्वारा "फेर्टिगेशन" अवश्य घटक है और पोषकों को बचाने से खरपतवार प्रबंधन के लिए होने वाला श्रम कम किया जा सकता है। फल मक्खी और सफेद मक्खी संक्रमण रोकने के लिए क्रमशः फेरोमोन फंदा और येलो स्टिकी फंदा के प्रयोग और कीटों के नियंत्रण के लिए नीम खली तेल के प्रयोग का निदर्शन किया गया।

- **डॉ.ए.गोपालकृष्णन,** निदेशक ने एन बी एफ जी आर, लखनऊ में 7 से 9 जनवरी 2015 के दौरान "मछली आनुवंशिक प्रभव-फेस-II" पर भा कृ अनु प आउटरीच परियोजना के सहयोगियों की बैठक में भाग लिया।
  वेरावल क्षेत्रीय केन्द्र में 25 से 27 जनवरी 2015 के दौरान मुआइना किया।
  कारवार में 24 से 27 फरवरी 2015 के दौरान समुद्री संवर्धन पर नेटवर्क परियोजना की पूर्व शुभारंभ कार्यशाला का उद्घाटन।
  मांगलूर के करकिकाली, उप्पुन्डा गाँव में 27-28 फरवरी, 2015 के दौरान समुद्री संवर्धन पालन स्थानों का मुआइना किया और संग्रहण मेले में भाग लिया।
- **डॉ.आर.नारायणकुमार,** अध्यक्ष, एस ई ई टी टी डी ने पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, नई दिल्ली में 5-6 फरवरी, 2015 के दौरान आयोजित टी ई ई बी तटीय एवं समुद्री आवास व्यवस्था अध्ययन ग्रुप की कार्यशाला में भाग लिया।
  एन ए ए एस, नई दिल्ली में 23 फरवरी, 2015 को आयोजित पी एम ई नए मार्गदर्शन कार्यान्वयन कार्यशाला में भाग लिया।
- **डॉ.वी.कृपा,** अध्यक्ष, एफ ई एम डी ने सी एम एफ आर आइ कारवार और मांगलूर अनुसंधान केन्द्रों में 19-21 जनवरी, 2015 के दौरान आयोजित क्यू आर टी बैठकों में भाग लिया। एन आइ ओ में आयोजित मड बैंक पुनरीक्षण बैठक में भाग लिया।
  सी एम एफ आर आइ, कोच्ची में 12 फरवरी, 2015 को आयोजित कृषि विज्ञान केन्द्र की वैज्ञानिक सलाहकार समिति बैठक में भाग लिया।
  कोच्ची में 13 फरवरी को आयोजित सी एम एफ आर आइ आइ जे एस सी की 12वीं बैठक में भाग लिया।
  नेटफिश, एम पी ई डी ए और सी क्लब द्वारा सेन्ट आल्बर्ट्स कॉलेज 22 फरवरी, 2015 को आयोजित कार्यक्रम में भाग लिया और "समुद्री संपदाओं का टिकाऊपन" विषय पर भाषण दिया।
  के यु एस ए टी द्वारा 12 मार्च, 2015 को 'समुद्री आवास तंत्र स्वास्थ्य' विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संग्रोष्ठी में भाग लिया और "समुद्री आवासतंत्र के स्वास्थ्य और टिकाऊपन-मानवीय गतिविधियों से भीषण" विषय पर प्रमुख भाषण दिया।
  केन्द्रीय मात्स्यिकी प्रौद्योगिकी संस्थान की 18 मार्च 2015 को आयोजित आइ एम सी बैठक में भाग लिया।
- **डॉ.पी.यु.ज़क्करिया,** अध्यक्ष, डी एफ डी ने सी आइ बी ए, चेन्नई में 24 जनवरी, 2015 को आयोजित भा कृ अनु प के सतर्कता अधिकारियों की बैठक में भाग लिया।
  सी आइ एफ टी, कोच्ची में 27-28 जनवरी, 2015 के दौरान आयोजित समुद्री मात्स्यिकी प्रबंधन कोड (एम एफ एम सी) बैठक में भाग लिया।

विदेश में प्रतिनियुक्ति

- **डॉ.ए.गोपालकृष्णन**, निदेशक और **डॉ.संध्या सुकुमारन**, वैज्ञानिक ने एफ ए ओ-बी ओ बी एल एम ई की निधिबद्धता से 17-18 फरवरी, 2015 के दौरान थायलान्ड के फुकेत में "भारतीय तटके इंडियन बांगडा रास्ट्रेलिगर कानागुर्टा के प्रजनन स्टॉक पर आनुवंशिक अध्ययन" विषय पर आयोजित परियोजना कार्यशाला में भाग लिया।
- **डॉ.वी.कृपा**, प्रधान वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष, समुद्री पर्यावरण प्रबंधन प्रभाग ने सान्टोस, ब्रज़ील में 23-27 मार्च, 2015 के दौरान "विश्व के महासागरों पर जलवायु परिवर्तन के प्रभाव" विषय पर आयोजित 3वीं अंतर्राष्ट्रीय परिचर्चा में आमंत्रित वक्ता के रूप में भाग लिया और लेख प्रस्तुत किया।
- **डॉ.जोनसन बी.**, वैज्ञानिक ने एन एफ पी (नेथरलान्ड्स फेलोशिप प्रोग्राम ऑफ नेथरलान्ड) के अंदर वागेनिगन विश्वविद्यालय, वागेनिगन के नवाचार विकास केन्द्र में 31 अक्तूबर से नवंबर 2015 के दौरान 'मात्स्यिकी गवेर्नन्स' विषय पर आयोजित ह्रस्वकालीन पाठ्यक्रम में भाग लिया। पाठ्यक्रम द्वारा मात्स्यिकी गवेर्नन्स और सह-प्रबंधन की अवधारणा, गवेर्नन्स एवं प्रबंधन की चुनौतियाँ, मात्स्यिकी प्रबंधन पर विभिन्न दृष्टि कोण और सहभागिता प्रणालियों पर व्यावहारिक अभिमुखीकरण तथा मात्स्यिकी योजना प्रक्रिया में सहायक औजारों पर सैद्धांतिक दिशानिर्देश प्रदान किया गया।

अंटार्कटिका के भारती स्टेशन में

अन्टार्टिका में भारत की 34 वीं खोजयात्रा (आइ एस ई ए)

जिनेश पी.टी., अनुसंधान अध्येता, वेलापवर्ती मात्स्यिकी प्रभाग, सी एम एफ आर आइ ने अन्टार्टिका में भारत की 34वीं खोजयात्रा (आइ एस ई ए) कार्यक्रम छात्र सहभागी के रूप में सफल रूप से पूरा किया। राष्ट्रीय अटार्टिका एवं समुद्री अनुसंधान केन्द्र (एन सी ए ओ आर) द्वारा 7 जनवरी से 1 मार्च 2015 तक की अवधि के दौरान खोजयात्रा अयोजित की गयी। इस दौरान विभिन्न भौगोलिक स्थानों को पार करके ब्रोकनेस द्वीप, फिशर द्वीप और लार्समान हिल्स के तटीय समुद्र के 30 स्टेशनों से नमूना संग्रहण किया गया और अटार्टिका के तटीय समुद्र में कठोर गर्मी के दौरान उपलब्ध डायटमों के विशेष संदर्भ में पादपप्लवकों की गुणात्मक / मात्रात्मक विविधता पर सर्वेक्षण एवं अभिलेखन किया गया।

अंटार्कटिका के भारती स्टेशन में

- **डॉ.के.एस.मोहम्मद,** अध्यक्ष, एम एफ डी ने दिनांक 10 फरवरी 2015 को सी एम एफ आर आइ, कोच्ची में आयोजित कृषि विज्ञान केन्द्र की वैज्ञानिक सलाहकार समिति की बैठक में भाग लिया।

  एम पी ई डी ए द्वारा आंध्रा प्रदेश के विजयवाडा में 20-22 फरवरी, 2015 के दौरान आयोजित अक्वा अक्वेरिया इंडिया 2015 में भाग लिया और "द्विकपाटियों की जलकृषि" विषय पर प्रस्तुतीकरण किया।

  चेन्नई में 6-7 मार्च, 2015 के दौरान आयोजित आइ सी एस एफ-बी ओ बी एल एम ई उपराष्ट्रीय कार्यशालाः एफ ए ओ एस एस एफ मार्ग रेखाः इंडिया (पूर्व तट) में भाग लिया।

  एन यु ए एल एस, कलमशेरी में 28 मार्च, 2015 को "पर्यावरण पर केरल के कानूनः वर्तमान प्रवणता और न्यायिक प्रतिक्रियाएं" विषय पर आयोजित एक दिवसीय संगोष्ठी में विशेषज्ञ के रूप में भाग लिया।

  लखनऊ विश्वविद्यालय द्वारा कालिना कैम्पस, मुम्बई विश्वविद्यालय में 6 जनवरी, 2015 को आयोजित 102वां इंडियन सयन्स कोंग्रेस के विशेष सत्रः मानव स्वास्थ्य के लिए जलकृषि एवं समुद्री जैवप्रौद्योगिकी में भाषण दिया।
- **डॉ.जी.महेश्वरुडु,** अध्यक्ष, सी एफ डी ने सी एम एफ आर आइ, कोच्ची में 26 और 27 मार्च, 2015 को आयोजित आर ए सी बैठक में भाग लिया।
- **डॉ.सी.एस.पुरुषोत्तमन,** प्रधान वैज्ञानिक ने एन ए ए आर एम, हैदराबाद में 26 जनवरी, 2015 को भा कृ अनु प के संस्थानों के एच आर डी नोडल अधिकारियों के लिए आयोजित कार्यशाला में भाग लिया।
- **डॉ.प्रतिभा रोहित,** प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी वैज्ञानिक, मांगलूर अनुसंधान केन्द्र ने सी एम एफ आर आइ, कोच्ची में 26 और 27 मार्च, 2015 को आयोजित अनुसंधान सलाहकार समिति बैठक में भाग लिया।
- **डॉ.वीरेन्द्र वीर सिंह,** प्रभारी वैज्ञानिक, मुम्बई अनुसंधान केन्द्र ने भा कृ अनु प-केन्द्रीय अंतःस्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर, कोल्कत्ता में 30 जनवरी, 2015 को नाइट्रजन बहाव-इसका निर्धारण एवं जलकृषि व्यवस्थाओं में मूल्यांकन विषय पर आयोजित कार्यशाला में भाग लिया।

  केन्द्रीय मात्स्यिकी शिक्षा संस्थान, वेर्सोवा, मुम्बई में 19 जनवरी, 2015 को आयोजित बोर्ड ऑफ स्टडीस, मात्स्यिकी अर्थशास्त्र, विस्तार एवं सांख्यिकी प्रभाग की बैठक में भाग लिया।

  केन्द्रीय मात्स्यिकी शिक्षा संस्थान, वेर्सोवा, मुम्बई में 21 फरवरी, 2015 को समुद्री शैवल पैदावार पर आयोजित एक दिवसीय विचार मंथन कार्यशाला में भाग लिया।

  दिल्ली में एन एफ बी एस एफ ए आर ए परियोजना के अंदर 19-20 फरवरी, 2015 के दौरान आयोजित एन ए एस एफ की चौथी वार्षिक पुनरीक्षण बैठक में भाग लिया।

  भारतीय मात्स्यिकी सर्वेक्षण की दिनांक 30 मार्च, 2015 को आयोजित परामर्श समिति की 16वीं बैठक में भाग लिया।

  सी एम एफ आर आइ, कोच्ची में 26 और 27 मार्च, 2015 को आयोजित अनुसंधान परामर्श समिति की 19वीं बैठक में भाग लिया।
- **डॉ.ए.के.अब्दुल नासर,** प्रभारी वैज्ञानिक, मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र ने मन्नार खाडी जैवमंडल संरक्षण ट्रस्ट द्वारा मंजूर की गयी परियोजनाओं की प्रगति के मूल्यांकन के लिए 5 मार्च, 2015 को आयोजित आर ए जी पुनरीक्षण बैठक में सदस्य के रूप में भाग लिया।

  सी एम एफ आर आइ, कोच्ची में 26 और 27 मार्च, 2015 को आयोजित अनुसंधान परामर्श समिति की 19वीं बैठक में भाग लिया।
- **डॉ.मार्गरट मुत्तुरतिनम ए.,** प्रभारी वैज्ञानिक, मद्रास अनुसंधान केन्द्र ने एम.एस. स्वामिनाथन रिसर्च फाउन्डेशन द्वारा 2-4 फरवरी, 2015 के दौरान चेन्नई में आयोजित ग्रामीण ज्ञान अभियान के राष्ट्रीय कन्वेन्शन में भाग लिया।

  सी एम एफ आर आइ, कोच्ची में 26 और 27 मार्च, 2015 को आयोजित अनुसंधान परामर्श समिति की 19वीं बैठक में भाग लिया।
- **डॉ.के.मोहम्मद कोया,** प्रभारी वैज्ञानिक, वेरावल क्षेत्रीय केन्द्र ने कम्यूनिटी रेडियो स्टेशन, कृषि विज्ञान केन्द्र, कोडिनार की दिनांक 3 जनवरी, 2015 को आयोजित पहली लोकवाणी सलाहकार समिति बैठक में भाग लिया।

  जुनगढ़ कृषि विश्वविद्यालय की कृषि अनुसंधान उप समिति की दिनांक 20 और 21 फरवरी 2015 को आयोजित 11वीं बैठक में भाग लिया।

  कृषि विज्ञान केन्द्र, कोडिनार की दिनांक 25 फरवरी, 2015 को आयोजित वैज्ञानिक सलाहकार समिति बैठक में भाग लिया।

  सी एम एफ आर आइ, कोच्ची में 26 और 27 मार्च, 2015 को आयोजित अनुसंधान परामर्श समिति की 19वीं बैठक में भाग लिया।

  जुनगढ़ कृषि विश्वविद्यालय के क्षेत्रीय केन्द्र, माहुआ द्वारा खारा पानी चिंगट पालन पर 3 मार्च, 2015 को आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम में विशेषज्ञ के रूप में भाग लिया।
- **डॉ.मार्गरट मुत्तुरतिनम ए.,** प्रधान वैज्ञानिक और **डॉ.विद्या जयशंकर,** वरिष्ठ वैज्ञानिक ने फिशरीस टेकनोक्राफ्ट्स फोरम और केन्द्रीय खारा पानी जलकृषि संस्थान (सी आइ बी ए) द्वारा संयुक्त रूप से 28 जनवरी, 2015 को चेन्नई में 'समुद्रीबास मछली की जलकृषि-स्तर और वाणिज्यिक उत्पादन के लिए साध्यता' विषय पर आयोजित राष्ट्रीय कार्यशाला में भाग लिया।
- **डॉ.के.विजयकुमारन,** प्रधान वैज्ञानिक ने चेन्नई में 6-7 मार्च, 2015 के दौरान आयोजित आइ सी एस एफ-बी ओ बी एल एम ई इंडिया (पूर्व तट) कार्यशालाः खाद्य सुरक्षा एवं गरीबी उन्मूलन के विशेष संदर्भ में टि काऊ लघु पैमाने की मात्स्यिकी सुरक्षित करने हेतु एफ ए ओ स्वैच्छिक मार्ग रेखा में भाग लिया।
- **डॉ.के.विजयकुमारन,** प्रधान वैज्ञानिक और **डॉ.शोभा जो किषकूडन,** वरिष्ठ वैज्ञानिक ने एफ ए ओ लघु पैमाने मात्स्यिकी मार्ग रेखा के कार्यान्वयन पर चेन्नई में 5 फरवरी, 2015 को आयोजित आइ सी एस एफ/बी ओ बी एल एम ई राज्य स्तरीय समुद्री मछुआरा परामर्श बैठक में भाग लिया।

  ए के जी स्टडी एंड रिसर्च सेन्टर, तिरुवनंतपुरम द्वारा आलेप्पी, केरल में 17 फरवरी 2015 को मात्स्यिकी सेक्टर और तटीय मेखला विकास पर आयोजित संगोष्ठी में भाग लिया और 'गभीर सागर मात्स्यिकी नीति में परिवर्तनः विज्ञान, आर्थिकी और मछुआरों पर संघात' विषय पर लेख प्रस्तुत किया।
- **डॉ.जो के.किषकूडन,** वरिष्ठ वैज्ञानिक ने मात्स्यिकी विभाग, तमिल नाडु सरकार, चेन्नई में 16 फरवरी 2015 को आयोजित एफ आइ एम एस यु एल ।। की राज्य स्तरीय तकनीकी समिति की पहली बैठक में भाग लिया।

  सी आइ बी ए, चेन्नई में 28 जनवरी, 2015 को चेन्नई में समुद्रीबास मछली की जलकृषि-स्तर और वाणिज्यिक उत्पादन के लिए साध्यता पर आयोजित कार्यशाला में 'खुला सागर में सी एम एफ आर आइ द्वारा समुद्रीबास मछली पालन' विषय पर लेख प्रस्तुत किया।
- **डॉ.शोभा जो किषकूडन,** वरिष्ठ वैज्ञानिक ने मात्स्यिकी विभाग, तमिल नाडु सरकार, चेन्नई में समुद्री कच्छपों के परिरक्षण एवं संरक्षण पर 4 मार्च, 2015 को आयोजित स्टेकहोल्डरों की बैठक में भाग लिया।

  कोच्ची में 29-30 जनवरी, 2015 को आयोजित एन आइ सी आर ए परिवीक्षा बैठक एवं कार्यशाला में भाग लिया।
- **डॉ.ए.पी.दिनेशबाबु,** प्रधान वैज्ञानिक ने स्पेस अप्लिकेशन सेन्टर, अहम्मदाबाद में 16-17 मार्च, 2015 के दौरान पारितंत्र पर आधारित मात्स्यिकी प्रबंधन परियोजना की बैठक में जी आइ एस विशेषज्ञ के रूप में भाग लिया।

  कॉलेज ऑफ फिशरीस, मांगलूर में 14 मार्च, 2015 को आयोजित अनुसंधान गतिविधियों की तकनीकी पुनरीक्षा बैठक में भाग लिया।
- **डॉ.पी.एस.स्वातिलक्ष्मी,** वरिष्ठ वैज्ञानिक ने राज्य मात्स्यिकी विभाग, केरल सरकार के सहयोग से 14 फरवरी, 2015 को कण्णूर, केरल में आयोजित राज्य मात्स्यिकी संपदा प्रबंधन समिति (एफ आइ आर एम ए) की

बैठक में भाग लिया और समुद्री मछुआरों का देशज तकनीकी ज्ञान पर भाषण दिया।

- **डॉ.गीता शशिकुमार,** वरिष्ठ वैज्ञानिक ने भा कृ अनु प अनुसंधान समुच्चय, गोवा में 20 मार्च, 2015 को मात्स्यिकी संपदाओं द्वारा द्वितीयक अवसरों के अंदर नदीमुखों और खारा पानी क्षेत्रों में शंबु पालन पर 25 मछुआरों के लिए आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम में विशेषज्ञ के रूप में भाग लिया।
- **डॉ.ए.पी.दिनेशबाबु,** प्रधान वैज्ञानिक और **डॉ.बिन्दु सुलोचनन,** वरिष्ठ वैज्ञानिक ने भविष्य के लिए सुरक्षित पानी विषयक सी एस आइ आर ओ-आइ आइ टी-एन बी एफ जी आर परियोजना के अंदर एन बी एफ जी आर, आइ आइ टी आर लखनऊ में 23-27 मार्च, 2015 के दौरान सुरक्षित पानी पर आयोजित डी एफ ए टी-पी एस एल पी प्रशिक्षण कार्यशाला में भाग लिया। दक्षिण पश्चिम मेखला के हिन्दी अधिकारियों के लिए 27 मार्च, 2015 को मांगलूर में आयोजित राजभाषा एवं पुरस्कार वितरण समारोह में भाग लिया।
- **डॉ.ए.के.अब्दुल नासर** और **डॉ.आर.जयकुमार,** वरिष्ठ वैज्ञानिक गण ने सी एम एफ आर आइ कारवार अनुसंधान केन्द्र में 25 फरवरी 2015 को समुद्री संवर्धन पर आयोजित 'अखिल भारतीय नेटवर्क परियोजना' में भाग लिया।
- **डॉ.आर.जयकुमार,** वरिष्ठ वैज्ञानिक ने समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण (एम पी ई डी ए) द्वारा आंध्रा प्रदेश के विजयवाडा में 20-22 फरवरी, 2015 के दौरान आयोजित अक्वा अक्वेरिया इंडिया 2015 में भाग लिया।
- **डॉ.बी.जोनसन,** वैज्ञानिक ने बी ओ बी पी-आइ जी ओ द्वारा 7-8 जनवरी, 2015 को चेन्नई, तमिल नाडु में मछुआरों की आजीविका पर आयोजित एफ ए ओ-टी सी पी थीमाटिक कार्यशाला में भाग लिया।
  एफ ए ओ लघु पैमाने की मात्स्यिकी मार्गदर्शन के कार्यान्वयन पर आइ सी एस एफ-बी ओ बी एल एम ई राज्य स्तरीय समुद्री मछुआरा परामर्श पर रामनाथपुरम, तमिल नाडु में 7 फरवरी, 2015 को और चेन्नई में 7 मार्च, 2015 को आयोजित बैठकों में भाग लिया।
- **डॉ.वीरेन्द्र वीर सिंह,** प्रधान वैज्ञानिक, **श्रीमती अनुलक्ष्मी चेल्लप्पन, डॉ.पुरुषोत्तमा जी.बी., सुश्री कार्तीरेड्डी श्यामला** और **डॉ.अखिलेश के.वी.,** वैज्ञानिक गण ने केन्द्रीय मात्स्यिकी शिक्षा संस्थान, मुम्बई में 22 जनवरी, 2015 को सुरा मछली परिरक्षण पर आयोजित 4वीं राष्ट्रीय मिशन बैठक में भाग लिया।
- **डॉ.के.एस.मोहम्मद, डॉ.वी.कृपा, डॉ.पी.यु. ज़क्करिया, डॉ.डी.प्रेमा, डॉ.जोसिलीन जोस, डॉ.ई.एम.अब्दुसमद, डॉ.सोमी कुरियाकोस,** प्रधान वैज्ञानिक गण, **डॉ.टी.एम.नजिमुदीन, डॉ.रेखा जे.नायर, डॉ.यु.गंगा,** वरिष्ठ वैज्ञानिक गण, **श्री मोहम्मद कोया, डॉ.आर. विद्या,** वैज्ञानिक गण, **श्रीमती जेन्नी बी.,** वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी और **श्री के.के. सजिकुमार,** तकनीकी सहायक ने कोच्ची में 5-8 फरवरी, 2015 के दौरान आयोजित विश्व महासागर विज्ञान कोंग्रेस (डब्लियु ओ एस सी) 2015 में भाग लिया।
- **डॉ.रेखादेवी चक्रबर्ती,** वरिष्ठ वैज्ञानिक ने पी एम जी आर केन्द्र, एन बी एफ जी आर, कोच्ची में 9-14 फरवरी, 2015 के दौरान 'आण्विकसूचक' विषय पर आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया।
- **डॉ.आर.नारायणकुमर, डॉ.एन.अश्वती** और **डॉ.आर.गीता** ने सी एम एफ आर आइ मद्रास अनुसंधान केन्द्र में 5-9 जनवरी, 2015 को आवास तंत्रों के मूल्यांकन पर आयोजित विचार विमर्श प्रशिक्षण एवं कार्यशाला में भाग लिया।
- **डॉ.पी.एस.स्वातिलक्ष्मी,** वरिष्ठ वैज्ञानिक और **डॉ.बी.जोन्सन,** वैज्ञानिक ने मात्स्यिकी आजीविका वर्धन एवं विविधीकरण के लिए रणनीति तथा कार्ययोजना पर 7-8 जनवरी,2015 को चेन्नई में आयोजित एफ ए ओ-टी सी पी ओर्गनाइसेशन ऑफ थीमाटिक कार्यशाला में भाग लिया।
- **डॉ.आर.नारायणकुमर,** अध्यक्ष, एस ई ई टी टी डी और **डॉ.जी.महेश्वरुडु,** अध्यक्ष, सी एफ डी और **डॉ.एन.अश्वती** ने सी एम एफ आर आइ, कोच्ची में दिनांक 10 फरवरी, 2015 को आयोजित कृषि विज्ञान केन्द्र, एरणाकुलम की वार्षिक वैज्ञानिक सलाहकार समिति की बैठक में भाग लिया।
- **डॉ.आर.नारायणकुमर,** अध्यक्ष, एस ई ई टी टी डी **डॉ.टी.वी.सत्यानन्दन,** अध्यक्ष, एफ आर ए डी, **डॉ.श्याम एस.सलिम** और **डॉ.एन.अश्वती,** वरिष्ठ वैज्ञानिकों ने सी एम एफ आर आइ, कोच्ची में 10 मार्च, 2015 को एम ओ एस पी आइ द्वारा प्रायोजित इनपुट-आउटपुट इन मराइन फिशिंग इन इंडिया टू अराइव अट ग्रोस वेल्यू एडड पर अध्ययन में भाग लिया।
- **डॉ.विपिनकुमार वी.पी.,** वरिष्ठ वैज्ञानिक ने असीसी विद्यानिकेतन पब्लिक स्कूल, चेम्बुमुक्कु, काक्कनाड में 27 फरवरी, 2015 को आयोजित कृषि प्रदर्शनी हरित दर्शनम में मुख्य अतिथि के रूप में भाग लिया और प्रदर्शनी का उद्घाटन किया।
  चिन्मया विद्यालय, कण्णमाली में 30 जनवरी, 2015 को आयोजित विज्ञान प्रदर्शनी में भाग लिया और प्रदर्शनी का उद्घाटन किया।
- **डॉ.एम.एस.मदन,** प्रधान वैज्ञानिक ने सी एम एफ आर आइ मुख्यालय, कोच्ची में 26 और 27 मार्च, 2015 को आयोजित आर ए सी बैठक में भाग लिया।
- **डॉ.पी.पी.मनोजकुमार,** प्रधान वैज्ञानिक और **डॉ.एम.शिवदास,** प्रधान वैज्ञानिक ने सी एम एफ आर आइ टूटिकोरिन अनुसंधान केन्द्र में 20 मार्च, 2015 को आयोजित एक दिवसीय पणधारी बैठक का समन्वयन किया।
- **डॉ.पी.एस.आशा,** प्रधान वैज्ञानिक ने वडोदरा, बडौदा में 5-6 जनवरी, 2015 के दौरान डी एस टी द्वारा प्रायोजित और मानव श्रेष्ठता अकादमी द्वारा आयोजित महिला वैज्ञानिकों के कार्यक्रम 'सयन्स ऑफ लिविंग' में भाग लिया।
- **डॉ.एम.शिवदास,** प्रधान वैज्ञानिक ने संपदा परिरक्षण एवं कार्बन फुट प्रिन्ट पर सी आइ एफ टी, कोच्ची में दिनांक 13 मार्च, 2015 को आयोजित राष्ट्रीय परामर्श बैठक में भाग लिया।
- **श्री एल.रंजित,** वैज्ञानिक ने नेशनल इन्स्टिट्यूट ऑफ ओशियन टेकनोलजी फील्ड सेन्टर, ए एन सी ओ एस टी, पोर्टब्लेयर में 15-20 दिसंबर, 2014 के दौरान आयोजित पी ए डी आइ ओपन वाटर स्कूबा निमज्जन कार्यक्रम सफल रूप से पूरा किया।
- **श्री रामकुमार,** वैज्ञानिक ने सी एम एफ आर आइ मद्रास अनुसंधान केन्द्र, चेन्नई में 5-9 जनवरी, 2015 के दौरान 'पारिस्थितिकी मूल्यांकन एवं प्रणालियाँ' विषय पर आयोजित कार्यशाला में भाग लिया।
  सी एम एफ आर आइ, कोच्ची, केरल में 29-30 जनवरी, 2015 को आयोजित एन आइ सी आर ए पुनरीक्षण कार्यशाला में भाग लिया।
- **डॉ.श्रीनाथ के.आर., श्री विनयकुमार वास** और **श्री के.मोहम्मद कोया,** वैज्ञानिकों ने सी एम एफ आर आइ, कोच्ची में 6-7 फरवरी, 2015 को 'दूर संवेदित आंकडा उपयुक्त करके शक्य मात्स्यिकी प्राप्ति के आकलन का वैज्ञानिक आधार' विषय पर आयोजित दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया।
- **डॉ.श्रीनाथ के.आर.,** वैज्ञानिक ने एन ई आर सी इंडिया, कोच्ची में 9-13 फरवरी, 2015 के दौरान 'साटलाइट आंकडा प्रबंधन और पाइथन उपयुक्त करके क्लाउड कंप्यूटिक के प्रयोग पर आधुनिक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम' विषय पर आयोजित 5 दिवसीय प्रशिक्षण में भाग लिया।
- **डॉ.ज्ञानरंजन दास** और **श्री विनयकुमार वास,** वैज्ञानिकों ने सी जी पी एल, मुन्द्रा, गुजरात में 14 मार्च, 2015 को 'कच्छ में मांग्रोव और जैवविविधता परिरक्षण के लिए कार्पोरेट एवं सामुदायिक सहभागिता' विषय पर आयोजित कार्यशाला में भाग लिया।
- **श्री मोहम्मद कोया** और **डॉ.दिवु डी.,** वैज्ञानिकों ने 20 जनवरी, 2015 को प्रबंध निदेशक, गुजरात लाइवलीहुड प्रोमोशन को. लिमिटड (जीएल पी सी) गांधीनगर द्वारा आयोजित बैठक में भाग लिया और 'गुजरात में समुद्री शैवाल पैदावार पर साध्यता अध्ययन' के लिए परामर्श परियोजना का प्रस्ताव प्रस्तुत किया।

नियुक्तियाँ

नाम	पदनाम	केन्द्र	प्रभावी तारीख
1. श्री एस. महाराजन	निम्न श्रेणी लिपिक	मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र	02.01.2015
2. कुमारी संध्या सी. के	निम्न श्रेणी लिपिक	सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	15.01.2015

पदोन्नति

नाम एवं पदनाम	पदोन्नत पद	प्रभावी तारीख	केन्द्र
1. श्री के. सेन्तिल कुमार, स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	तकनीशियन	24-03-2015(अपराह्न)	मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र
2. श्री एस. विल्लिंगटन स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	तकनीशियन	24-03-2015(अपराह्न)	टूटिकोरिन अनुसंधान केंन्द्र
3. श्री एम. तयलन, स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	तकनीशियन	25-03-2015(पूर्वाह्न)	मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र
4. श्री एन.रामसामी स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	तकनीशियन	25-03-2015(पूर्वाह्न)	टूटिकोरिन अनुसंधान केंन्द्र
5. श्री एस. चन्द्रशेखरन स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	तकनीशियन	25-03-2015(पूर्वाह्न)	मद्रास अनुसंधान केन्द्र
6. श्री चुदासामा करसन पुंजा स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	तकनीशियन	30-03-2015(पूर्वाह्न)	वेरावल क्षेत्रीय केन्द्र

स्थानांतरण

नाम एवं पदनाम	से	तक	प्रभावी तारीख
1. श्रीमती सुमीना एन. के., सहायक	मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र	सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	02-02- 2015
2. श्री एस. प्रदीप, तकनीशियन	वेरावल क्षेत्रीय केन्द्र	कडलूर क्षेत्र केन्द्र	27-02-2015

अंतर संस्थानीय स्थानांतरण

नाम एवं पदनाम	से	तक	प्रभावी तारीख
श्री विजेन्द्र कुमार मीणा वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी (एस एम एस - सस्य विज्ञान एवं मृदा विज्ञान)	सी एम एफ आर आइ के वी के, नारक्कल	एन डी आर आइ कर्नाल	06.02.2015

बैठकें

1. सी एम एफ आर आइ की 12वीं आइ जे एस सी की 7वीं बैठक दिनांक13-02-2015 को सी एम एफ आर आइ, कोच्ची में आयोजित की गयी.
2. सी एम एफ आर आइ की 19वीं आर ए सी की बैठक 26-27 मार्च, 2015को सी एम एफ आर आइ, कोच्ची में आयोजित की गयी.

कार्यभार ग्रहण

डॉ ए. मारगरेट मुत्तु रत्तिनम, प्रधान वैज्ञानिक ने दिनांक 31.01.2015 को सी एम एफ आर आइ, मद्रास अनुसंधान केन्द्र, मद्रास के प्रभारी वैज्ञानिक के रूप में कार्यभार ग्रहण किया.

सेवानिवृत्तियाँ

श्री अहमद कमल बाषा ए.
तकनीकी अधिकारी
31.01.2015, मद्रास अनुसंधान केन्द्र

श्री एल. के. सुवर्णा
स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ
31.01.2015,मांगलूर अनुसंधान केन्द्र

डॉ ए. पी. लिप्टन
प्रधान वैज्ञानिक
28.02.2015,विषिंजम अनुसंधान केन्द्र

श्री जे. श्रीनिवासन
सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी
28.02.2015, सी एम एफ आर आइ, कोच्ची

श्री एम. मानिवसागम
वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी
28.02.2015, मद्रास अनुसंधान केन्द्र

श्री जोणी आर. डयस
तकनीकी अधिकारी
28.02.2015, मुम्बई अनुसंधान केन्द्र

कुमारी टी. ए. ओमना
तकनीकी अधिकारी
28.02.2015,विषिंजम अनुसंधान केन्द्र

श्री गंगाधरा गौडा
स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ
28.02.2015, मांगलूर अनुसंधान केन्द्र

श्री वी. के. सुरेश
वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी
31.03.2015, सी एम एफ आर आइ, कोच्ची

कोच्ची को खारा पानी में स्थापित पिंजरों का दृश्या

कृपया पुष्ठ सं. 5 देखें

सी एम एफ आर आइ
CMFRI

कडलमीन

सी एम एफ आर आइ समाचार

कडलमीन, सी एम एफ आर आइ समाचार केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, कोचीन का तिमाही प्रकाशन है। यह प्रकाशन तिमाही के दौरान संस्थान की प्रमुख कार्यविधियों पर विवरण देने के साथ साथ अनुसंधान क्षेत्र की नई गतिविधियों और सफलताओं पर प्रकाश डालता है और प्रौद्योगिकी जानकारियों को मछुआरा समुदाय तक विकीर्णन करता है।